सांध्य दैनिक
नई दृष्टिबिंदु
सु-विचार
जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि है प्रसन्नता।
„fwX d"fÀf‡fZ
सच की शक्ति, जनता की दृष्टि
PRGI Reg No - CTHIN/25/A3746

वर्ष–01 अंक–33 | संपादक आलोक तिवारी | दुर्ग, शनिवार 21 फरवरी 2026 | पृष्ठ 08 | मूल्य –2 रुपए,

दुर्घटना पीड़ितों को मिलेगा 7 दिन तक 1.50 लाख रुपए का कैशलेस उपचार

दुर्घटना पीड़ितों को मिलेगा 7 दिन तक 1.50 लाख रुपए का कैशलेस उपचार

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

परिवहन मंत्री केदार कश्यप के निर्देशानुसार भारत सरकार की महत्वाकांक्षी पीएम राहत योजना के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए प्रदेश में तैयारी तेज कर दी गई है। इसी क्रम में परिवहन सचिव एस. प्रकाश ने आज सभी जिले के पुलिस प्रशासन, स्वास्थ्य विभाग और डायल 112 के अधिकारियों की वर्चुअल बैठक ली। बैठक में सचिव एस. प्रकाश ने निर्देश दिए कि सड़क दुर्घटना में घायल व्यक्तियों को योजना के तहत 7 दिनों तक अधिकतम 1 लाख 50 हजार रुपए तक का कैशलेस उपचार तुरंत उपलब्ध कराया जाए। परिवहन मंत्री केदार कश्यप ने कहा कि प्रदेश के लगभग 1000 अधिकृत अस्पतालों के साथ-साथ अन्य सक्षम अस्पतालों को भी इस योजना से जोड़ा जाए, ताकि जरूरतमंदों को समय पर उपचार मिल सके। साथ ही यह सुनिश्चित किया जाए कि अस्पतालों के उपचार संबंधी भुगतान 10 दिनों के भीतर कर दिए जाएं।

परिवहन सचिव एस. प्रकाश ने अधिकारियों से कहा कि दुर्घटनाओं की रोकथाम हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए। इसके लिए जिलों में आवश्यक कदम उठाए जाएं ताकि सड़क दुर्घटना में कमी लाई जा सके। उन्होंने कहा कि यदि दुर्घटना होती है, तो घायल व्यक्ति को ह्यगोल्डन ऑवर में त्वरित उपचार मिलना अत्यंत आवश्यक है। योजना का उद्देश्य इसी महत्वपूर्ण समय में उपचार उपलब्ध कराकर पीड़ितों की जान बचाना है। राज्य सरकार द्वारा योजना के त्वरित क्रियान्वयन से सड़क दुर्घटना पीड़ितों को समय पर और निःशुल्क उपचार का लाभ मिल सकेगा, जिससे अनेक बहुमूल्य जीवन बचाए जा सकेंगे।

बैठक में एनआईसी के राज्य अधिकारी अरविंद यादव और अमित देवांगन ने पावर पॉइंट के माध्यम से प्रस्तुति और वीडियो के माध्यम से योजना के बेहतर क्रियान्वयन की प्रक्रिया समझाई। उन्होंने पुलिस, स्वास्थ्य विभाग, डायल 112 और जिला प्रशासन की भूमिकाओं एवं जिम्मेदारियों की विस्तृत जानकारी दी। वर्चुअल बैठक में बस्तर, मानपुर-मोहला-अंबागढ़ चौकी सहित सभी जिलों के कलेक्टर, पुलिस अधीक्षक, स्वास्थ्य विभाग के नोडल अधिकारी एवं संबंधित अधिकारी शामिल हुए। बैठक में उप परिवहन आयुक्त मनोज कुमार ध्रुव तथा अंतर्विभागीय लीड एजेंसी (सड़क सुरक्षा) से दिनेश टांक भी उपस्थित थे।

संदर्भ- सुप्रीम कोर्ट की चिंता- त्वरित टिप्पणी

रेवड़ी नहीं, रोजगार की राह

आलोक तिवारी

देश की राजनीति इन दिनों एक ऐसे मोड़ पर खड़ी है, जहां लोकलुभावन वादे और दीर्घकालिक विकास आमने-सामने दिखते हैं। मुफ्त बिजली, पानी, नकद सहायता, यात्रा, गैस–सूची लंबी है। चुनावी मंचों से घोषणाएं होती हैं, तालियां बजती हैं, और मतदाता के मन में तात्कालिक राहत की उम्मीद जगती है। लेकिन सवाल यह है कि क्या यह राहत स्थायी समाधान है? मुफ्त योजनाओं पर सुनवाई के दौरान सुप्रीम कोर्ट ऑफ इंडिया ने समय-समय पर चिंता जताई है कि राजकोषीय अनुशासन और विकास की प्राथमिकताएं कहीं पीछे न छूट जाएं। अदालत ने यह स्पष्ट किया कि शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक सुरक्षा जैसी योजनाएं कल्याणकारी राज्य की जिम्मेदारी हैं, परंतु बिना वित्तीय आकलन के अंधाधुंध घोषणाएं भविष्य की अर्थव्यवस्था पर बोझ बन सकती हैं।

यह बहस केवल ह्यरेवड़ीह्ण बनाम ह्यरोजगारह्ण की नहीं है, बल्कि राजनीतिक संस्कृति की है। जब सरकारें स्थायी उद्योग, कौशल विकास और रोजगार सृजन की बजाय तात्कालिक नकद हस्तांतरण पर अधिक जोर देती हैं, तो समाज में आत्मनिर्भरता की भावना कमजोर पड़ने का खतरा रहता है। लोकतंत्र में मतदाता सम्मान चाहता है–खैरात नहीं, अवसर। दूसरी ओर, यह भी सच है कि देश के बड़े हिस्से में गरीबी, बेरोजगारी और असमानता अब भी चुनौती हैं। ऐसे में लक्षित सामाजिक सहायता योजनाओं की आवश्यकता से इनकार नहीं किया जा सकता। समस्या तब खड़ी होती है जब चुनावी मौसम में घोषणाओं की बाढ़ आ जाती है और वित्तीय स्रोतों का स्पष्ट खाका सामने नहीं आता। राज्य पहले से ही राजस्व घाटे से जूझ रहे हैं। कर्ज का बोझ बढ़ रहा है। यदि बजट का बड़ा हिस्सा अल्पकालिक योजनाओं में चला जाएगा, तो बुनियादी ढांचे–सड़क, उद्योग, शिक्षा संस्थान, अस्पताल–पर निवेश कैसे बढ़ेगा? और यदि निवेश नहीं बढ़ेगा, तो रोजगार के अवसर कहां से आएंगे। लोकतंत्र की परिपक्वता का अर्थ है–लोकप्रिय निर्णय और उत्तरदायी निर्णय के बीच संतुलन। घोषणापत्र केवल वादों की सूची नहीं, बल्कि वित्तीय जवाबदेही का दस्तावेज होना चाहिए। राजनीतिक दलों को यह स्पष्ट करना चाहिए कि योजनाओं के लिए संसाधन कहां से आएंगे और उनका दीर्घकालिक प्रभाव क्या होगा।

आज देश को ऐसी राजनीति की आवश्यकता है जो युवाओं को मुफ्त की बैसाखी नहीं, बल्कि स्वावलंबन का मंच दे। रोजगार सृजन, कौशल विकास और उद्यमिता को प्राथमिकता देकर ही आत्मनिर्भर भारत की अवधारणा साकार हो सकती है। अंततः, सवाल मुफ्त देने या न देने का नहीं है। सवाल है–क्या हम भविष्य के भारत को कर्ज और निर्भरता की राह पर ले जाएंगे, या अवसर और उत्पादन की दिशा में?

राजनीति को यह तय करना होगा कि उसे ताली चाहिए या परिवर्तन।

राज्य सरकार जल संरक्षण को जनआंदोलन का स्वरूप देने के लिए प्रतिबद्ध - विष्णु देव

जल संरचनाओं की रक्षा और जल के प्रति जिम्मेदार सोच अपनाने का मुख्यमंत्री ने किया आह्वान

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय और केंद्रीय जल शक्ति मंत्री श्री सी. आर. पाटिल की संयुक्त अध्यक्षता में आज नवा रायपुर स्थित मुख्यमंत्री निवास कार्यालय में आयोजित बैठक में प्रदेश में जल संचय-जन भागीदारी 2.0 अभियान के क्रियान्वयन की गहन समीक्षा की गई। केंद्रीय मंत्री श्री पाटिल इस बैठक में वर्चुअली शामिल हुए और बैठक को संबोधित किया। इस दौरान बिलासपुर, दुर्ग और सूरजपुर जिले के कलेक्टरों ने अपने-अपने जिलों में अभियान के अंतर्गत संचालित कार्यों और गतिविधियों की विस्तृत जानकारी प्रस्तुत की।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि जल संकट 21वीं सदी की केवल गंभीर पर्यावरणीय ही नहीं, बल्कि आर्थिक, सामाजिक और विकासात्मक चुनौती भी बन चुका है। उन्होंने कहा कि जल संरक्षण को स्थायी और प्रभावी बनाने के लिए जनभागीदारी अनिवार्य है उन्होंने देश के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के उस संदेश का उल्लेख किया, जिसमें पानी के उपयोग को प्रसाद के समान मानते हुए जल के प्रति संवेदनशील और जिम्मेदार दृष्टिकोण अपनाने पर जोर दिया गया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन से प्रेरित होकर राज्य सरकार जल संरक्षण को जनआंदोलन का स्वरूप देने के लिए प्रतिबद्ध है।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि अभियान के पहले चरण में छत्तीसगढ़ ने देशभर में द्वितीय स्थान प्राप्त किया तथा विभिन्न जिलों को भी अलग-अलग श्रेणियों में पुरस्कार मिले। पहले चरण में सामुदायिक भागीदारी के मॉडल पर कार्य करते हुए बड़े पैमाने पर बोरवेल रिचार्ज, रूफटॉप रेनवॉटर हार्वेस्टिंग, रिचार्ज शाफ्ट, सोक पिट और ओपनवेल रिचार्ज जैसी संरचनाओं का निर्माण किया गया। श्री साय ने कहा कि प्रदेश में वर्तमान में 5 क्रिटिकल और 21 सेमी-क्रिटिकल भू-जल ब्लॉक चिन्हित हैं। वर्ष 2024 की तुलना में 2025 में इनमें से 5 ब्लॉकों में भू-जल निकासी में कमी और भू-जल स्तर में सुधार दर्ज किया गया है, जो जल संरक्षण प्रयासों के सकारात्मक परिणामों का संकेत है।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि अभियान के दूसरे चरण जल संचय-जन भागीदारी 2.0 के अंतर्गत तकनीक आधारित और अधिक परिणाममूलक रणनीति अपनाई जा रही है। राज्य सरकार ने 31 मई 2026 तक 10 लाख जल संरक्षण संरचनाओं के निर्माण का लक्ष्य निर्धारित किया है। मुख्यमंत्री ने इसे जल सुरक्षा की दिशा में प्रदेश का ऐतिहासिक कदम बताया। उन्होंने कहा कि राज्य के रजत जयंती वर्ष के अवसर पर एक विशेष पहल के तहत 10 एकड़ से अधिक भूमि वाले चार लाख से अधिक किसानों को अपने खेतों में डबरी निर्माण के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। इस कार्य में जिला प्रशासन के साथ-साथ औद्योगिक समूहों का सहयोग भी लिया जा रहा है। इन डबरियों से भू-जल स्तर में वृद्धि के साथ किसानों को सिंचाई एवं मछली पालन जैसी अतिरिक्त सुविधाएँ मिलेंगी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि दूसरे चरण में सभी जल संरचनाओं की जियोटैगिंग, ग्राम पंचायतों के वॉटर बजट तथा जल सुरक्षा योजनाओं के निर्माण पर भी विशेष ध्यान दिया जाएगा। साथ ही गांवों के युवाओं को जल मित्र के रूप में प्रशिक्षित किया जाएगा, ताकि अभियान को गति मिल सके। मुख्यमंत्री ने स्पष्ट किया कि क्रिटिकल और सेमी-क्रिटिकल ब्लॉकों पर विशेष फोकस रखते हुए सेमी-क्रिटिकल ब्लॉकों में 40 प्रतिशत तथा क्रिटिकल ब्लॉकों में 65 प्रतिशत जल संरक्षण कार्यों का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

उन्होंने प्रदेशवासियों से जल संरक्षण को अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाने, जल संरचनाओं की रक्षा करने और जल के प्रति जिम्मेदार सोच अपनाने का आह्वान भी किया।

केन्द्रीय जल शक्ति मंत्री सी. आर. पाटिल ने छत्तीसगढ़ में जल संरक्षण के क्षेत्र में हो रहे कार्यों और नवाचारों की सराहना की। उन्होंने कहा कि गत वर्ष जल संरक्षण के प्रयासों में छत्तीसगढ़ देशभर में दूसरे स्थान पर रहा, जो राज्य के लिए गौरव का विषय है।

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने सितंबर 2024 को सूरत से ह्यजल संचय जन भागीदारी अभियान की शुरुआत की थी और ह्यकमभूमि से मातृभूमि के लिए जल संचयन में सहयोग का आह्वान किया था। इस अभियान का उद्देश्य जल संरक्षण को जनआंदोलन का रूप देना है।

केंद्रीय मंत्री श्री पाटिल ने प्रदेश के समस्त कलेक्टरों से मनरेगा के तहत जल संचय कार्यों के लिए प्राप्त राशि का पूर्ण और प्रभावी उपयोग सुनिश्चित करने को कहा।

उन्होंने राजनांदगांव प्रवास के दौरान एक महिला सरपंच द्वारा स्वयं के प्रयासों से जल संचयन के लिए किए गए उल्लेखनीय कार्यों की प्रशंसा की। इसके साथ ही उन्होंने जल संचय में व्यापक जनभागीदारी बढ़ाने पर जोर दिया।

बैठक में मुख्यमंत्री के प्रमुख सचिव सुबोध कुमार सिंह, जल संसाधन विभाग के सचिव राजेश सुकुमार टोप्पो तथा जल शक्ति मंत्रालय, भारत सरकार के सचिव कांताराव और छत्तीसगढ़ के समस्त कलेक्टर वर्चुअली उपस्थित थे।

समारोह भजन, सत्संग, कीर्तन एवं धार्मिक आयोजनों में होगा उपयोग

उपमुख्यमंत्री ने कबीर कुटियों को वाद्ययंत्रों के लिए 4.25 लाख रूपए का किया वितरण

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

उप मुख्यमंत्री एवं कवर्धा विधायक विजय शर्मा ने आज कवर्धा स्थित विधायक कार्यालय में 17 कबीर कुटियों को भजन, सत्संग, कीर्तन एवं अन्य धार्मिक आयोजनों के लिए प्रत्येक कबीर कुटी को 25-25 हजार रुपए की मान से कुल 4 लाख 25 हजार रुपए की राशि का चेक वितरित किया। कबीरपंथ से जुड़ी धार्मिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों को सुदृढ़ बनाने के उद्देश्य से जनसंपर्क मद से वाद्ययंत्रों के खरीदी के लिए यह स्वीकृत किया गया। उप मुख्यमंत्री श्री शर्मा द्वारा स्वीकृत यह राशि संबंधित कबीर कुटियों को आज प्रदान की गई, जिससे वहां नियमित रूप से आयोजित होने वाले भजन, सत्संग, कीर्तन एवं अन्य आध्यात्मिक कार्यक्रमों के लिए आवश्यक वाद्य सामग्री उपलब्ध कराई जा सकेगी।

उल्लेखनीय है कि क्षेत्र की कबीर कुटियों द्वारा वाद्ययंत्रों की आवश्यकता को लेकर आवेदन प्रस्तुत किया गया था। समाज की इस आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए उप मुख्यमंत्री विजय शर्मा ने तत्परता दिखाते हुए 17 कबीर कुटियों के लिए 25-25 हजार रुपये की राशि स्वीकृत की। आज उपमुख्यमंत्री शर्मा द्वारा विधिवत चेक वितरण कर कबीरपंथी समाज को यह सौगात प्रदान की।

इस अवसर पर राज्य पुलिस जवाबदेही प्राधिकरण के सदस्य भगतराम पटेल, जिला पंचायत अध्यक्ष ईश्वरी साहू, नगर पालिका अध्यक्ष चंद्रप्रकाश चंद्रवंशी, पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष संतोष पटेल, नरेन्द्र मानिकपुरी, पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष मनहरण कौशिक, भुखन साहू, रामबिलास चंद्रवंशी, विजय पाटिल श्री रवि राजपुत, श्रीमती सतविंदर पाहुजा, श्रीमती विजय लक्ष्मी तिवारी, लाला राम साहू सहित जनप्रतिनिधि उपस्थित थे।

होली पर शराब बिक्री का निर्णय दुर्भाग्यपूर्ण–भोलाराम साहू

प्रमुख त्यौहार पर शराब दुकानें खोलने का निर्णय समाज में अशांति फैलाने वाला है

नई दृष्टिबिंदु / राजनांदगांव

खुज्जी भोला राम साहू ने प्रदेश सरकार पर तीखा प्रहार करते हुए कहा है कि होली जैसे प्रमुख त्यौहार पर शराब दुकानें खोलने का निर्णय समाज में अशांति फैलाने वाला है। उन्होंने आरोप लगाया कि विपक्ष में रहते हुए पूर्ण शराबबंदी की मांग करने वाली भाजपा अब सत्ता में आते ही शुष्क दिवसों पर भी शराब बिक्री की अनुमति देकर प्रदेश को नशे की ओर धकेल रही है।

राजनांदगांव में जारी प्रेस विज्ञप्ति में विधायक साहू ने कहा कि गांधी पुण्यतिथि के दिन शराब दुकानें खोलना राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के नशामुक्ति के विचारों का अपमान है। अब होली और मुहर्रम जैसे संवेदनशील त्यौहारों पर शराब बिक्री की अनुमति देकर सरकार कानून-व्यवस्था को खतरे में डाल रही है। उनका कहना है कि त्यौहार के अवसर पर शराब की खुली बिक्री से उपद्रव, मारपीट और आपराधिक घटनाओं में वृद्धि की आशंका है।

उन्होंने कहा कि भाजपा ने चुनाव पूर्व प्रदेश में पूर्ण शराबबंदी का वादा किया था और महिला मोर्चा की कार्यकर्ताओं ने भी राजधानी में आंदोलन कर शराबबंदी की मांग उठाई थी। किंतु अब भाजपा सरकार के कार्यकाल में शराब दुकानों की संख्या और बिक्री दोनों में बढ़ोतरी हो रही है। नई आबकारी नीति के तहत 102 नई शराब दुकानें खोलने, होटल-ढाबों व बार के लाइसेंस शुल्क में छूट देने तथा ऐप के माध्यम से ब्रांड और उपलब्धता की जानकारी देने जैसे कदम उठाए गए हैं।

विधायक साहू ने आरोप लगाया कि शराब और नशीले पदार्थों की बढ़ती खपत से प्रदेश में अपराध और महिलाओं के विरुद्ध हिंसा की घटनाएं बढ़ रही हैं। पहले राज्य में सात ड्राई डे निर्धारित थे, लेकिन नई नीति में होली, मुहर्रम और 30 जनवरी (महात्मा गांधी निर्वाण दिवस) को ड्राई डे की सूची से हटा दिया गया है।

उन्होंने सरकार से मांग की कि होली एवं अन्य महत्वपूर्ण अवसरों पर शराब दुकानें खोलने के निर्णय को तत्काल वापस लिया जाए, ताकि प्रदेश में शांति और सामाजिक सौहार्द बना रहे।

शहर का विकास जरूरी है, लेकिन खेल मैदानों की बलि चढ़ा कर नहीं-रिकेश सेन

विधायक रिकेश सेन की बड़ी पहल - संजय नगर खेल मैदान की नीलामी निरस्त, मैदान लिए 1 करोड़ की घोषणा

नई दृष्टिबिंदु / भिलाईनगर

वैशाली नगर विधायक रिकेश सेन ने जनभावनाओं और खिलाड़ियों के भविष्य को प्राथमिकता देते हुए संजय नगर तालाब के समीप स्थित खेल मैदान को बचाने के लिए बड़ा कदम उठाया है। विधायक की तत्काल पहल पर नगर पालिक निगम भिलाई द्वारा प्रस्तावित व्यावसायिक नीलामी को निरस्त करने के निर्देश दिए गए हैं। साथ ही, विधायक ने उक्त मैदान के कायाकल्प और खिलाड़ियों की सुविधाओं के लिए 1 करोड़ रुपये की राशि देने की घोषणा की है।

श्री सेन ने बताया कि आज सुबह संजय नगर वार्ड-6 के युवाओं ने उनसे भेंट कर गुहार लगाई कि निगम संजय नगर के खेल मैदान की निलामी कर उसे लीज पर देने पहल कर रहा है। एमआईसी के प्रस्ताव बाद आनलाईन टेंडर प्रक्रिया चालू कर दी गई है। विधायक रिकेश सेन के संज्ञान में यह विषय आते ही वो तत्काल भिलाई निगम पहुंचे और प्रस्तावित टेंडर को तत्काल रोकने के निर्देश दिए।

आपको बता दें कि नगर पालिक निगम भिलाई द्वारा संजय नगर तालाब के बाजू में स्थित खेल मैदान को व्यावसायिक कॉम्प्लेक्स निर्माण हेतु नीलाम करने की तैयारी की जा रही थी। इस पर कड़ा रुख अपनाते हुए विधायक ने स्पष्टकिया कि युवाओं और बच्चों के लिए खेलकूद का यही एकमात्र प्रमुख मैदान शेष है, जिसे किसी भी कीमत पर व्यावसायिक उपयोग के लिए नहीं दिया जाएगा।

विधायक ने अपनी पहल में चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि पूर्व में भी नगर पालिक निगम भिलाई द्वारा दक्षिण गंगोत्री सर्कस ग्राउंड जैसी महत्वपूर्ण जमीनों को बेच दिया गया जिससे शहर में मेला, सांस्कृतिक कार्यक्रम और युवाओं के खेल प्रशिक्षण के लिए जगह का अभाव हो गया है। संजय नगर के साथ हम ऐसा नहीं होने देंगे।

प्रमुख निर्णय और घोषणाएं

नगर पालिक निगम के एमआईसी प्रस्ताव पर प्रस्तावित नीलामी प्रक्रिया को विधायक श्री सेन ने कमिश्नर से चर्चा कर तत्काल प्रभाव से रोकने के निर्देश दिए हैं। श्री सेन ने कहा कि इस मैदान के विकास, बाउंड्री वॉल और खिलाड़ियों के लिए आधुनिक सुविधाओं हेतु विधायक निधि/प्रशासनिक मद से 1 करोड़ रुपये खर्च किए जाएंगे। विधायक श्री रिकेश सेन के इस निर्णय से स्थानीय खिलाड़ियों और क्षेत्रवासियों में हर्ष की लहर है। उन्होंने स्पष्ट किया कि शहर का विकास जरूरी है, लेकिन खेल मैदानों की बलि चढ़ा कर नहीं।

दिव्यांग शिविर में 153 हितग्राही चिन्हांकित

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

दुर्ग। एनटीपीसी-सेल कम्पनी लिमिटेड के निगमित सामाजिक दायित्व (सी.एस.आर.) योजना तथा भारतीय कृत्रिम अंग निर्माण निगम (भारत सरकार का उपक्रम) सहायक उत्पादन केन्द्र प्लॉट नं. 40 एवं 106, औद्योगिक क्षेत्र, रिछाई, जबलपुर (म.प्र.) एवं समाज कल्याण विभाग के संयुक्त तत्वाधान में 20 फरवरी 2026 को जनपद पंचायत दुर्ग छ.ग. के सभागार में दिव्यांगजन सहायक उपकरण वितरण हेतु चिन्हांकन/मूल्यांकन तथा परीक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

उप संचालक समाज कल्याण से मिली जानकारी अनुसार शिविर में 197 हितग्राही सम्मिलित हुए जिसका परीक्षण उपरान्त 153 पात्र हितग्राहियों को सामग्री हेतु चिन्हांकित किया गया है। उक्त चिन्हांकन/मूल्यांकन तथा परीक्षण शिविर में सुश्री प्रिया साहू, सभापति जिला पंचायत दुर्ग, श्री लोमेश चन्द्राकर एवं श्री गोकुल वर्मा, सभापति जनपद पंचायत दुर्ग श्री देवनारायण चन्द्राकर, पार्षद एवं लोक कर्म प्रभारी, नगर पालिक निगम दुर्ग, श्री हितेश देशमुख, विधायक प्रतिनिधि एवं श्री ए.पी. गौतम, उपसंचालक, समाज कल्याण विभाग दुर्ग एवं समाज कल्याण विभाग दुर्ग के अन्य अधिकारी / कर्मचारीगण उपस्थित रहे।

निगम आयुक्त ने किया सेक्टर-6 क्षेत्र का औचक निरीक्षण

नई दृष्टिबिंदु / भिलाईनगर

अधिकारियों को साफ-सफाई कार्य प्राथमिकता से पूर्ण करने के दिए निर्देश

नगर पालिक निगम भिलाई के आयुक्त राजीव कुमार पाण्डेय ने आज जोन-5 अंतर्गत विभिन्न सार्वजनिक स्थलों का औचक निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने यात्री प्रतिक्षालय, उद्यान और टेनिस कोर्ट की व्यवस्थाओं का जायजा लिया और अधिकारियों को साफ-सफाई कार्य प्राथमिकता से पूर्ण करने के निर्देश दिए।

एम.जी.एम. स्कूल के समीप स्थित यात्री प्रतिक्षालय के निरीक्षण के दौरान आयुक्त ने पाया कि यात्रियों के बैठने के लिए लगाई गई कुर्सियां क्षतिग्रस्त हैं। उन्होंने इसे तत्काल दुरुस्त करने के निर्देश दिए ताकि यात्रियों को असुविधा न हो। सेक्टर-6 बम्लेश्वरी मंदिर के पास स्थित उद्यान का अवलोकन करते हुए उन्होंने बेहतर साफ-सफाई सुनिश्चित करने को कहा। उन्होंने स्पष्ट किया कि नागरिकों के टहलने और बैठने के लिए वातावरण स्वच्छ होना चाहिए।

समीपस्थ टेनिस कोर्ट का जायजा लेते हुए आयुक्त ने खिलाड़ियों के लिए उपलब्ध सुविधाओं की समीक्षा की और व्यवस्थाओं को और बेहतर बनाने के निर्देश दिए।

निरीक्षण के दौरान जोन आयुक्त अमरनाथ दुबे, कार्यपालन अभियंता प्रिया करसे, सहायक राजस्व अधिकारी अनिल मेश्राम, जोन स्वास्थ्य अधिकारी सागर दुबे एवं स्वच्छता निरीक्षक सूर्या, सुपरवाइजर मनीष चौधरी, वेंकट सहित अन्य कमचारी उपस्थित रहे।

उत्कृष्ट सेवा एवं समर्पण के लिए चिकित्साकर्मी शिरोमणि पुरस्कार से सम्मानित

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

भिलाई। सेल-भिलाई इस्पात संयंत्र के चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवाएँ विभाग के अंतर्गत कार्यरत जवाहरलाल नेहरू चिकित्सालय एवं अनुसंधान केंद्र, सेक्टर-9 में 16 फरवरी 2026 को मुख्य चिकित्सा अधिकारी (चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवाएं) डॉ. उदय कुमार की अध्यक्षता में ह्यकर्म शिरोमणिह्ल पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य चिकित्सा विभाग में कार्यरत कर्मियों के उत्कृष्ट कार्य, कर्तव्यनिष्ठा, रोगी-सेवा के प्रति समर्पण तथा संस्थान की गुणवत्ता उन्नयन में उनके उल्लेखनीय योगदान को सम्मानित करना था।

इस अवसर पर शोभा सिंह, ए.एन.एस.; लुकेन्द्र कुमार तारम, वरिष्ठ एम.टी.ए.; तथा आदित्यन एम., कनिष्ठ स्टाफ नर्स (नर्सिंग प्रशासन) को उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन, अनुकरणीय कार्यसंस्कृति एवं रोगी-हितैषी दृष्टिकोण के लिए ह्यकर्म शिरोमणिह्ल पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

मुख्य चिकित्सा अधिकारी (चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवाएं) डॉ. उदय कुमार ने पुरस्कृत कर्मियों को बधाई दी। उन्होंने आगे भी उत्कृष्ट सेवा परंपरा को निरंतर आगे बढ़ाने, रोगी-केंद्रित सेवाओं, समयबद्ध उपचार, संवेदनशील व्यवहार एवं टीम भावना के साथ कार्य करने का आह्वान किया। समारोह में उपस्थित अन्य वरिष्ठ चिकित्सकों ने भी सभी पुरस्कृत कर्मियों को बधाई दी। कार्यक्रम में उप प्रबंधक (नर्सिंग प्रशासन) श्रीमती शैला अब्राहम, सहायक प्रबंधक (मानव संसाधनह्लचिकित्सा) श्रीमती शिबा थॉमस तथा मानव संसाधन विभाग एवं चिकित्सा विभाग के अन्य कमचारीगण उपस्थित रहे।

संस्कारधानी में 4 मार्च को बरसेगा केसरिया रंग

राजनांदगांव। (नव दृष्टिबिंदु)। संस्कारधानी नगरी राजनांदगांव में आस्था और उल्लास का प्रतीक 'रंगोत्सव' इस वर्ष अपनी भव्यता के 35वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। श्री सत्यनारायण मंदिर समिति के तत्वावधान में आयोजित होने वाला यह ऐतिहासिक कार्यक्रम इस बार 04 मार्च (बुधवार) को आयोजित किया जाएगा। प्रतिवर्ष धुलेंडी पर आयोजित होने वाला यह उत्सव इस वर्ष 03 मार्च को चंद्रग्रहण होने के कारण एक दिन बाद मनाया जा रहा है।

रथ पर विराजेंगे अखंड ब्रह्मांड नायक समिति के अध्यक्ष अशोक लोहिया ने बताया कि मंदिर में विराजित अखंड ब्रह्मांड नायक भगवान श्री राधाकृष्ण वर्ष में केवल दो बार ही मंदिर के गर्भगृह से बाहर निकलते हैं। पहली बार भादवा शुक्ल एकादशी को डोल महोत्सव के अवसर पर और दूसरी बार चैत्र कृष्ण प्रतिपदा (धुलेंडी) को भक्तों के साथ होली खेलने के लिए। इस वर्ष 4 मार्च को सुबह 09:00 बजे भगवान को भव्य रथ पर विराजमान किया जाएगा, जिसके बाद नगर भ्रमण और शोभायात्रा प्रारंभ होगी। केसरिया रंग से सराबोर होगी नगरी इस उत्सव की सबसे बड़ी विशेषता 'केसरिया होली' है। शोभायात्रा के दौरान रथ से केसरिया रंग की फुहारें छोड़ी जाएंगी। समिति द्वारा सभी भक्तों के लिए विशेष आकर्षक टोपियां मंगवाई गई हैं, ताकि शोभायात्रा में एकरूपता दिखे। मार्ग में जगह-जगह भक्त टोलियां बनाकर भजनों पर नृत्य करेंगे। इन प्रमुख नामों पर रही आयोजन की जिम्मेदारी हाल ही में संपन्न हुई समिति की बैठक में सर्वसम्मति से आयोजन की रूपरेखा तैयार की गई। इस आयोजन को सफल बनाने में निम्नलिखित पदाधिकारियों और सदस्यों की मुख्य भूमिका है: प्रेरणा स्रोत: स्व. सेठ नथमल अग्रवाल जिनके मार्गदर्शन में 34 वर्ष पूर्व यह परंपरा शुरू हुई।

बिना अनुमति खनन, खेतों को नुकसान, जनजीवन बेहाल

बोइरडीह खैरडिटी में रातों-रात अवैध उत्खनन का खेल !

नरेन्द्र डाकलिया / राजनांदगांव

ब्लॉक के ग्राम पंचायत बोइरडीह और खैरडिटी इन दिनों कथित अवैध उत्खनन को लेकर सुर्खियों में हैं। ग्रामीणों का आरोप है कि क्षेत्र में बिना वैध अनुमति और रॉयल्टी के बड़े पैमाने पर खनन कर हाइवा वाहनों के माध्यम से सामग्री अन्य स्थानों पर खपाई जा रही है। स्थानीय लोगों के अनुसार यह गतिविधि देर शाम से लेकर रात के अंधेरे तक जारी रहती है, जिससे प्रशासनिक निगरानी पर भी सवाल खड़े हो रहे हैं।

ग्रामीणों का कहना है कि जेसीबी मशीनों से लगातार खुदाई के कारण आसपास के खेतों को नुकसान पहुंच रहा है। कच्ची सड़कों की हालत बदतर हो चुकी है और भारी वाहनों की आवाजाही से पूरे इलाके में धूल-गुबार का माहौल बन गया है। इससे न केवल राहगीरों और स्कूली बच्चों को परेशानी हो रही है, बल्कि स्वास्थ्य संबंधी चिंताएं भी बढ़ गई हैं।

स्थानीय निवासियों के मुताबिक अनियंत्रित उत्खनन से भूमि कटाव का खतरा बढ़ गया है। बारिश के मौसम में जलभराव और दुर्घटनाओं की आशंका से लोग चिंतित हैं। भारी वाहनों की तेज रफ्तार और लगातार आवाजाही से गांव की सुरक्षा व्यवस्था पर भी खतरा मंडरा रहा है। ग्रामीणों ने संबंधित विभागों और जिला प्रशासन से तत्काल हस्तक्षेप की मांग की है। लोगों का कहना है कि यदि समय रहते कार्रवाई नहीं हुई तो वे जनआंदोलन का रास्ता अपनाने को मजबूर होंगे। गांववासियों ने अवैध उत्खनन में संलिप्त तत्वों पर कड़ी कार्रवाई और पूरे मामले की उच्च स्तरीय जांच की मांग की है।अवैध उत्खनन पर प्रशासनिक चुप्पी, अधिकारी कटघरे में राजनांदगांव जिले में मुरूम और रेत के कथित अवैध उत्खनन व परिवहन को लेकर चर्चाओं का बाजार गर्म है। ग्रामीण इलाकों से लेकर शहरी सीमाओं तक लगातार मिल रही शिकायतों के बीच प्रशासनिक अधिकारियों की चुप्पी अब सवालों के घेरे में है। स्थानीय नागरिकों और जनप्रतिनिधियों का आरोप है कि जिम्मेदार अधिकारी न तो सार्वजनिक रूप से स्थिति स्पष्ट कर रहे हैं और न ही मीडिया के सवालों का जवाब दे रहे हैं।

जनभावना स्पष्ट है – अवैध गतिविधियों पर तत्काल रोक, जिम्मेदारों की पहचान और कड़ी कार्रवाई। साथ ही, प्रशासन से अपेक्षा है कि वह मीडिया व जनता के समक्ष स्थिति स्पष्ट करे, ताकि अफवाहों और शंकाओं पर विराम लग सके।

अधिकारी की चुप्पी क्यों?

क्षेत्र में खुलेआम चल रहे उत्खनन और भारी वाहनों की आवाजाही के बावजूद संबंधित अधिकारियों की ओर से ठोस प्रतिक्रिया का अभाव लोगों को खटक रहा है। आमजन पूछ रहे हैं – जब गतिविधियां सबके सामने हैं, तो कार्रवाई और आधिकारिक बयान में देरी क्यों? क्या यह प्रशासनिक उदासीनता है या किसी दबाव का परिणाम?

प्रेस से दूरी पर भी सवाल

मीडिया से संवाद लोकतांत्रिक जवाबदेही का अहम हिस्सा माना जाता है, लेकिन इस संवेदनशील मुद्दे पर अधिकारी की प्रेस से दूरी नई शंकाओं को जन्म दे रही है। पत्रकारों द्वारा बार-बार संपर्क प्रयासों के बावजूद स्पष्ट जानकारी न मिलना पारदर्शिता पर प्रश्नचिह्न लगा रहा है। स्थानीय स्तर पर यह धारणा बन रही है कि जवाबदेही से बचने के लिए संवाद से परहेज किया जा रहा है।

पार्टनरशिपकी चर्चाएं, राजस्व पर चोट

जिले में यह चर्चा जोरों पर है कि मुरूम और रेत के अवैध उत्खनन व परिवहन के नेटवर्क में कथित पार्टनरशिपका खेल चल रहा है। यदि आरोपों में दम है, तो यह सीधे-सीधे शासन के राजस्व को भारी नुकसान का मामला बनता है। नियमों के विपरीत खनन और बिना रॉयल्टी परिवहन से सरकारी खजाने को बड़ा झटका लगने की आशंका जताई जा रही है।

जांच हुई तो चौंकाने वाले तथ्य सामने आने की उम्मीद

स्थानीय नागरिकों का कहना है कि जिला प्रशासन और राजस्व विभाग की संयुक्त टीम द्वारा निष्पक्ष, व्यापक और जमीनी जांच कराई जाए, तो कई चौंकाने वाले तथ्य उजागर हो सकते हैं। उत्खनन स्थलों, परिवहन मार्गों, रॉयल्टी अभिलेखों और वाहन लॉग की बारीकी से पड़ताल से वास्तविक तस्वीर सामने आ सकती है।

छुरिया मंडई मेला में अवैध वसूली के आरोप, शिकायतों के बाद प्रशासन हरकत में

नई दृष्टिबिंदु / राजनांदगांव

छुरिया क्षेत्र में आयोजित मंडई मेला को लेकर अवैध वसूली के गंभीर आरोप सामने आए हैं। वार्ड क्रमांक 15 निवासी भोजवानी साहू द्वारा कलेक्टर कार्यालय में प्रस्तुत शिकायत में दावा किया गया है कि मेले के दौरान कुछ जनप्रतिनिधियों एवं अन्य व्यक्तियों द्वारा दुकानदारों व स्थानीय लोगों से मनमाने तरीके से 500 से ?2000 तक की वसूली की गई।

शिकायत के अनुसार, आरटीआई से यह खुलासा किया गया कि नगर पंचायत ने कोई नीलामी अथवा वसूली का अधिकार किसी को नहीं दिया है। फिर यह वसूली बिना वैध रसीद एवं नियमसम्मत प्रक्रिया के की गई है। आवेदक ने अपने आवेदन में संबंधित व्यक्तियों के नामों का उल्लेख करते हुए जांच एवं आवश्यक कार्रवाई की मांग की है। शिकायत के साथ रसीद की पावती जैसे दस्तावेज भी संलग्न बताए गए हैं।

मामले को संज्ञान में लेते हुए कलेक्टर कार्यालय ने

पत्र क्रमांक 366/जि.कले./शिका./2026, दिनांक 22.01.2026 के माध्यम से नगर पंचायत छुरिया के मुख्य नगर पालिका अधिकारी को जांच कर प्रतिवेदन प्रस्तुत करने के निर्देश जारी किए। आधिकारिक पत्र में स्पष्ट किया गया कि शिकायत में वर्णित तथ्यों का परीक्षण कर आवश्यक कार्रवाई सुनिश्चित की जाए तथा आवेदक को भी अवगत कराया जाए, किन्तु जिला प्रशासन के पत्र पर चुप्पी साधें रखना संदेह पैदा करता हैं। नव दृष्टि बिंदु से चर्चा में बताया गया कि आवेदक द्वारा बाद में प्रस्तुत एक अन्य आवेदन में आरोप लगाया गया कि निर्देश जारी होने के बावजूद अब तक कोई ठोस कारवाई अथवा सूचना उपलब्ध नहीं कराई गई। आवेदन में यह भी उल्लेख है कि संबंधित अधिकारी द्वारा आदेशों की अवहेलना की जा रही है, जिससे शिकायत का निराकरण लंबित है और आवेदक को अनावश्यक परेशानी का सामना करना पड़ रहा है।

इस पूरे घटनाक्रम ने स्थानीय स्तर पर प्रशासनिक कार्यप्रणाली पर प्रश्नचिह्न खड़े कर दिए हैं। नागरिकों का कहना है कि यदि मेले जैसे सार्वजनिक आयोजनों में पारदर्शिता नहीं बरती गई तो जनविश्वास प्रभावित हो सकता है। वहीं, प्रशासनिक सूत्रों के अनुसार, मामले की प्रक्रिया नियमानुसार चल रही है और जांच प्रतिवेदन के आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

फिलहाल, शिकायतकर्ता निष्पक्ष जांच और दोषियों पर कारवाई की मांग पर कायम है।

न्यायालय अतिरिक्त तहसीलदार भिलाई नगर, तहसील व जिला दुर्ग
- ईश्तहार-

श्रीमती इस न्यायालय का रा.प्र.के. 2025121010000165/ब-121 वर्ष 2025 26 आवेदक वी नागराजा पति बसंत कुमार निवासी शांति नगर भिलाई द्वारा ग्राम कोहका प.ह.न. 45 रा.नि.मं. कोहका तह. व जिला दुर्ग स्थित भूमि खसरा नं. 7571/1 रकबा 0.05 है./5585 वर्गफीट भूमि आवेदक के नाम पर दर्ज है। का आवासीय प्रयोजनार्थ पुनर्निर्धारण आदेश पारित किया गया है, जो वर्तमान में कृषि भूमि दर्ज है। जिसे ऑनलाईन राजस्व अभिलेख में परिवर्तित भूमि दर्ज किये जाने हेतु आवेदनमय दस्तावेज प्रस्तुत किया गया है। अतः जिस किसी भी व्यक्ति को कृषि भूमि से परिवर्तित भूमि दर्ज किये जाने में आपत्ति या उजर दावा हो तो सुनवाई तिथि दिनांक 15/01/2026 तक या उसके पूर्व स्वयं या अपने मान्य अधिवक्तागण के साथ उपस्थित होकर अपना आपत्ति प्रस्तुत कर सकते है। निर्धारित तिथि के बाद प्राप्त आवेदन पत्र पर कोई विचार नहीं किया जावेगा। गया है। आज दिनांक 23/12/2025 को मेरे स्वयं के हस्ताक्षर एवं न्यायालय के मुहर से जारी किया

अतिरिक्त तहसीलदार भिलाई नगर

न्यायालय अतिरिक्त तहसीलदार भिलाई नगर, तहसील व जिला दुर्ग
- ईश्तहार :-

26 आवेदक श्रीमती इस न्यायालय का रा.प्र.कें. 2025121010000165 /ब-121 वर्ष 2025 वी नागराजा पति बसंत कुमार निवासी शांति नगर भिलाई द्वारा ग्राम कोहका प.ह.न. 45 रा.नि.मं. कोहका तह. व जिला दुर्ग स्थित भूमि खसरा नं. 7571/1 रकबा 0.05 हे./5585 वर्गफीट भूमि आवेदक के नाम पर दर्ज है। का आवासीय प्रयोजनार्थ पुनर्निर्धारण आदेश पारित किया गया है, जो वर्तमान में कृषि भूमि दर्ज है। जिसे ऑनलाईन राजस्व अभिलेख में परिवर्तित भूमि दर्ज किये जाने हेतु आवेदनमय दस्तावेज प्रस्तुत किया गया है। अतः जिस किसी भी व्यक्ति को कृषि भूमि से परिवर्तित भूमि दर्ज किये जाने में आपत्ति या 17/03/2026 सर्व स्वयं या अपने मान्य अधिवक्तागण 17-2202612 उजर दावा हो तो सुनवाई तिथि दिनांक 15/01/2026 तक या उसके पूर्व स्वयं या अपने मे के साथ उपस्थित होकर अपना आपत्ति प्रस्तुत कर सकते है। निर्धारित तिथि के बाद प्राप्त आवेदन पत्र पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।

आज दिनांक 23/12/2025 को मेरे स्वयं के हस्ताक्षर एवं न्यायालय के मुहर से जारी किया गया है।

अतिरिक्त तहसीलदार अतिभिलाई साहसीलदार भिलाई नगर

कौसानीः हिमालय में प्रकृति की एक सुंदर कविता

महात्मा गांधी ने कौसानी के अपने हते के प्रवास के दौरान यह उद्धरण दिया था कि सुन्दरता की खोज में पता नहीं क्यों लोग यूरोप जाते हैं जबकि कौसानी में ही स्विट्जरलैंड विद्यमान है। शांत गांव, फलों से लदे बगीचे, चीड़ के पंक्तिबद्ध पेड़, चाय बागान, पहाड़ों में सर्पीले घुमाव भरे रास्ते कौसानी को बेहद खूबसूरत स्थल की गरिमा प्रदान करते हैं।

- **सुमित्रानंदन पन्त गैलरी :** प्रयात कवि सुमित्रानंदन पन्त की जन्मस्थली होने के कारण कौसानी में इस गैलरी का निर्माण किया गया। यहां तक पहुंचने वाला रास्ता पन्त मार्ग कहलाता है। यहां अल्मोड़ा के नेशनल यूजियम की एक शाखा संचालित है।यह कौसानी के मुख्य चौराहे के बिल्कुल समीप ही अवस्थित है। यहां पन्त जी द्वारा प्रयोग में लाये गए टेबल, कुर्सी तथा हरिवंश राय बच्चन, अमिताभ बच्चन के साथ की दुर्लभ तस्वीरों का संग्रह भी है।
- **यहां कैंपिंग कर सकते हैं :** कौसानी में आपको कैंपिंग करने का भी मोका मिलेगा। यहां आप अपनी जरूरतों से समझौता किए बिना प्रकृति की सुदंरता के करीब रहकर शांत वातावरण का अनुभव कर सकते हैं। अगर आप एक ऐसे व्यक्ति हैं, जिन्हें शांति, सुकून, प्रकृति की सैर और पक्षियों को देखना अच्छा लगता है, तो आपको कौसानी जरूर जाना चाहिए। एडवेंचर पसंद करने वाले लोग माउंटेन बाइकिंग, रॉक क्लाइम्बिंग और रैपलिंग जैसी एडवेंचर एक्टिविटीज का हिस्सा बन सकते हैं।यहां पर ईको एडवेंचर, पदमपुरी और कलसी फेमस कैंप हैं।
- **शॉल फैक्टरीः** पारंपरिक कुमाऊंनी कलाकृति को बढ़ावा देने और स्थानीय लोगों के लिए रोजगार का स्रोत प्रदान करने के लिएए 2002 में कौसानी शॉल फैक्ट्री शुरू की गई थी। तब से, कौसानी शॉल पर्यटकों के लिए एक तरह की आकर्षण का केंद्र बनी है।स्थानीय बुनकरों के डिजाइन किए गए, कई रंगों और सुंदर डिजाइन में आपको यहां मिलेंगे।
- **सोमेश्वर घाटी :** सोमेश्वर घाटी कौसानी से सिर्फ 10 किमी दूर है और यह दो नदियों कोसी और साईं के तट पर एक हिडन जेम है। यह घाटी सीढ़ीदार चावल के खेतों और देवदार से ढके पहाड़ों के लुभावने दृश्य दिखाती है। आप यहां लॉन्लोग वॉक्दस, कैंपिंग और साइकलिंग का आनंद ले सकती हैं। इसके साथ ही यहां सोमेश्वर मंदर भी बहुत लोकप्रिय है।

दिल्ली के करीब है

बेहद शांत और प्राचीन प्राकृतिक सुंदरता की तलाश करने वाले लोगों के लिए कौसानी दिल्ली के करीब सबसे खूबसूरत डेस्टीनेशन्स में से एक है। दिल्ली से इसकी दूरी मात्र 412 किमी है। हिल स्टेशन उत्तराखंड में है। पेड़ों से घिरा कौसानी प्रकृति की सैर करने के लिए एक अच्छी जगह है। यहां के जंगलों में आप बेहद शांति का अनुभव करेंगे।

अनासक्ति आश्रम

अनासक्ति या गांधी आश्रम महात्मा गाँधी को समर्पित स्थल है। यहां के शिखर सोपान से हिमालयी चोटियों का विहंगम नजारा लिया जा सकता है। यहां गांधी साहित्य से भरा एक पुस्तकालय भी है। यहां पर्यटन सीजन में लगभग 1000 पर्यटक रोजाना आते हैं। यहां स्थित प्रार्थना कक्ष में सुबह-शाम विशेष प्रार्थना भी होती है।

चश्मे में क्यों छिपाएं, अपने फीचर्स को करें हाइलाइट

अगर आप आंखों पर पावर वाला चश्मा पहनती हैं तो हो सकता है आप आंखों के मेकअप को गैरजरूरी मानते हुए इस ओर कभी ध्यान देने की जरूरत ही नहीं समझती होंगी। आंखों के चश्मे के भीतर होने के बावजूद इन्हें और छिपाने की बजाय मेकअप से चेहरे के फीचर्स को हाइलाइट करके भी ग्लैमरस देखा जा सकता है।

- **आईब्रोज :** इनकी कंटूरिंग आपके चश्मे पर निर्भर करती है। यदि आपके चश्मे का फ्रेम बड़ा है तो आपको ज्यादा मेकअप नहीं करना चाहिए। कुछ चश्मों के फ्रेम ऐसे होते हैं, जिनमें आईब्रोज ऊपर से साफ दिखायी देती है। कुछ भी हो अपनी आईब्रोज को ग्रूम कराएं। इन्हें वैक्स, थ्रेड या प्लकर की मदद से शेप में रखें। आईब्रोज के भीतर गैप्स को भरने के लिए आईब्रो पैंसिल का इस्तेमाल करें, लेंकिन उन्हें ज्यादा काला भी न बनाएं। जिनकी नेचुरली आईब्रोज पतली हैं और उन पर बाल कम है उन्हें भरने के लिए ज्यादा गहरे रंग का इस्तेमाल न करें।
- **चश्मे का फ्रेम :** यदि आपके चश्मे का फ्रेम का रंग वार्म है तो आईब्रो और लिपिस्टक में वार्म टोन का इस्तेमाल करें। अपने फ्रेम के अनुसार मेकअप रखें। फ्रेम के कलर से मेल खाता आईशेडो लगाएं। फ्रेम बोल्ड और गहरे कलर का है तो आई लिड्स पर मोटी लाइन लगाएं और न्यूट्रल कलर का आईशेडो इस्तेमाल में लाएं। हल्के रंग के रिमलैस फ्रेम में गहरे रंग का आईशेडो अच्छा लगता है। गहरे काले रंग के हैवी फ्रेम के साथ आईशेडो ब्राइट कलर का रखें।
- **लिपिस्टक :** कलरफुल फ्रेम के साथ लिपिस्टक का रंग हल्का होना चाहिए। यदि ग्लासेज की क्लासिक हैं तो बोल्ड लिपिस्टक का शेड चुनें। हल्के टिंटेड ग्लासेज के साथ ब्राइट आईशेडो का इस्तेमाल करें ताकि लिप्स भी बोल्ड इफेक्ट दे। आईब्रो या लिप्स दोनों में से एक को हाईलाइट करें। यदि आपका फ्रेम सुंदर है और आईशेडो भी अच्छा है तो लिप कलर डार्क नहीं होना चाहिए।
- **पलकें और बरोनियां :** आंखों को बड़ी और ब्राइट दिखाने के लिए आईलैशेज को कर्ल करें। आईलाइनर की मदद से एक पतली लाइन खींचें जो आंखों के कोनो तक जाएं। यदि आप नेचुरल लुक चाहती हैं तो ब्लैक की बजाय ब्रांच, ब्राउन या ग्रे आईलाइनर का इस्तेमाल करें। छोटे ब्रश वाला मस्कारा आईलिड्स पर लगाएं, ताकि मस्कार न फैले।
- **लिक्विड कंसीलर :** ज्यादा क्रीमबेस कंसीलर को आंखों पर लगाने से चेहरे पर मेकअप की कई परतें दिखती हैं। चश्मे का शीशा अगर ज्यादा पावर का है तो लिक्विड कंसीलर चुनें। यह आपकी त्वचा से मेल खाता है।
- **फ्रेम का चयन :** चश्मे के फ्रेम का चयन अपनी आंखों और साइज के अनुरूप करें। यदि आपका चेहरा छोटा है तो ओवल शेप फ्रेम चुनें। यदि आपका चेहरा गोल और मध्यम या बड़ी आंखें हैं तो कैट आई ग्लासेज का चयन करें। मेकअप करते समय ग्लासेज को ऊपर उठाएं और मेकअप पूरा करने के बाद ही इन्हें लगाएं। बीच में ही बार-बार ग्लासेज लगाने से मेकअप खराब हो सकता है। मेकअप को उतारते समय ग्लासेज को भी उतारकर अलग रखें।

वर्ल्ड आर्ट्स डे

अभिव्यक्ति और भावनाओं का शक्तिशाली माध्यम

कला हमेशा से ही अभिव्यक्ति और भावनाओं को तलाशने का एक शक्तिशाली माध्यम रहा है। यही वजह है कि कला और संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए हर साल 15 अप्रैल को विश्व कला दिवस का आयोजन किया जाता है।

साथ ही इस दिन के बहाने सामान्य लोगों के बीच अलग-अलग कलाओं के प्रति जागरूकता बढ़ाने का काम किया जाता है। पहली बार विश्व कला दिवस यानी वर्ल्ड आर्ट डे 15 अप्रैल 2012 में मनाया गया था। संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन के मुताबिक विश्व कला दिवस का लक्ष्य समाज में कलात्मक अभिव्यक्तियों को दृढ़ता से एकीकृत करना है। यही नहीं, समाज के विकास में कला के महत्व और योगदान को भी बताना है।

कैसे मनाया जाता है कला दिवस

दुनियाभर में विश्व कला दिवस के अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों, सम्मेलनों, प्रदर्शनियों और कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है। शैक्षणिक संस्थानों में बच्चों व युवाओं को कला से जोड़ने के लिए तरह-तरह के आयोजन आदि किए जाते हैं।

बहुत से लोग ट्रैवलिंग के दौरान अपने कपड़े, जूते, हेल्थ से संबंधी दवाएं तो ले जाना याद रखते हैं पर मेकअप के सामान पर ध्यान नहीं देते। सफर के दौरान भी आपको कॉस्मेटिक्स की आवश्यकता पढ़ती है तो ध्यान दें क्या क्या लेकर जाएं अपने साथः

कॉस्मेटिक्स रखें साथ, जब करें सफर

- सफर में हमेशा साथ बॉडी लोशन रखें। इसे आप प्लास्टिक की बोतल में रख सकते हैं ताकि सफर के दौरान वे टूटने न पाएं।
- सफर में धूल मिट्टी का साथ तो वैसा है जैसा धूप छांव का। धूल मिट्टी से त्वचा रफ और गंदी हो जाती है इसे साफ रखने के लिए अपने साथ टोनर की छोटी बोतल और छोटा कॉटन रोल रखें। इससे आप सफर में अपनी त्वचा की सफाई का पूरा ध्यान रख सकती हैं।
- सनस्क्रीन लोशन भी अपने बैग में रखना न भूलें ताकि बाहर निकल कर आपकी त्वचा पर अल्ट्रा वॉयलेट किरणें प्रभाव न डाल रखें।
- अपने साथ छोटी शीशी वैसलीन की रखें ताकि हाथों पैरों और चेहरे पर इसे लगा सकें।
- काजल पेंसिल साथ रखें जिसका प्रयोग आप आई लाइनर और काजल की तरह कर सकते हैं।
- बैग में डबल ब्लशर रखें ताकि उसका प्रयोग ब्लशर और लिपस्टिक दोनों के लिए प्रयोग कर सकें। ब्लशर का शेड कुछ नेचरल लें ताकि हर अवसर पर उसका प्रयोग कर सकें।
- मच्छरों से बचाने हेतु मॉस्किटो कॉइल अवश्य रख लें ताकि जहां आप जा रहे हैं स्वयं को मच्छर काटने से बचा सकें।
- त्वचा की ताजगी हेतु पानी का सेवन करते रहें। अपने साथ बड़ी बोतल पानी की रख लें। अगर और आवश्यकता पड़े तो सील बंद बोतल ही खरीदें।
- बालों की सफाई हेतु शैपू, कंडीशनर के सैशे रख लें ताकि बाहर बालों की गंदगी से बचा जा सके।
- सफर में बालों को बांध कर रखें। बैग में एक दो क्लचर रबड़ बैंड साथ रखें।

गर्मियां आईं परेशानियां लाईं

जाड़े के मौसम के बाद गर्मी का मौसम ठंड और ठंड से होने वाली परेशानियों से निजात तो दिलाता है, लेकिन गर्मी के मौसम में भी हीट स्ट्रोक्स, सनबर्न, रेशेज, पसीने की दुर्गंध जैसी समस्याएं तापमान बढ़ने के साथ-साथ और ज्यादा बढ़ जाती है। इस मौसम में होने वाली एलर्जी से एंटीबॉयोटिक्स से काफी हद तक राहत तक पायी जा सकती है। इसके अलावा हमारी रसोई में और बहुत सारी चीजें हैं जिनका इस्तेमाल करके हम इस मौसम में होने वाले परेशानियों से उबर सकते हैं।

सनबर्न : तेज धूप में बाहर रहने से त्वचा झुलस जाती है।इससे शरीर में पानी की कमी होने के साथ थकान भी ज्यादा लगती है। सन स्क्रीम और सनब्लॉक से केवल कुछ हद तक ही बचाव हो सकता है, लेकिन कई बार तेज धूप से बचाने में ये भी नाकाम रहते हैं। सनबर्न से बचने के लिए हमारे गार्डन में उगा एलोवेरा काफी सहायक हो सकता है। ऐलोवेरा के पौधे में मौजूद जैल में कई ऐसे तत्व पाये जाते हैं जो सनबर्न से राहत दिलाते हैं। इसके अलावा कोकोनट ऑयल भी झुलसी हुई त्वचा की जलन को कम करता है। ठंडे दूध का इस्तेमाल किया जाता है या पपीते के पेस्ट को झुलसी त्वचा पर लगाया जा सकता है। यदि आप सनबर्न को कम करना चाहते हैं तो हल्के पके टमाटर का सेवन करना चाहिए। टमाटर में मौजूद लाइकोपिन हमारे शरीर को सूर्य की किरणों से प्रोटेक्शन देता है।

पसीने की दुर्गंध : गर्मी के दिनों में पैरों में पसीना आने के कारण उनसे बदबू आने लगती है। इसके लिए डियोड्रेंट और टेलकम पाउडर तथा परफ्यूम्स का सहारा लेना पड़ता है। लेकिन हमारी रसोई में कई ऐसे चीजें हैं, जिनका इस्तेमाल करके गर्मी में होने वाली इस समस्या से छुटकारा पाया जा सकता है। पैरों को साबुन से धोने के बाद इन पर टमाटर का जूस लगाएं या नहाने के पानी में इसे मिलाकर 15 मिनट तक पैरों को उसमें डुबोकर रखें। नहाने के बाद अंडरआर्म्स को बेकिंग सोडा मिले पानी से साफ करें। इससे बैक्टीरिया खत्म होते हैं। पैरों की बदबू को दूर करने के लिए अपने शूज में अंदर की ओर डियूड्रेंट लगाएं। काले नमक मिले पानी में 10 मिनट तक पैरों को भिगोकर रखें इससे काफी फायदा होता है।

मुंहासे : गर्मी के दिनों में हमारी त्वचा ऑयली हो जाती है जिससे ब्लैक हैड्स और ब्रेक आउट्स होते हैं। गर्मी और नमी से हमारे रोमकूप ज्यादा सक्रिय हो जाते हैं, जिसकी वजह से चेहरे और शरीर पर मुंहासे हो जाते हैं। इसके लिए चेहरे को बार-बार धोएं और इसे ऑयल फ्री रखें। लेमन जूस और गुलाब जल का इस्तेमाल स्किन टोनर के रूप में करें। चेहरे पर खीरे का रस लगाएं। संतरे के छिलके को सुखाकर पीस लें और इसे उस जगह पर लगाएं जहां मुंहासे हों। इसके लिए टूथपेस्ट का इस्तेमाल भी किया जा सकता है। इसमें मैंथोल और कई एंटीबैक्टीरियल तत्व होते हैं जो मुंहासों की समस्या से राहत दिलाते हैं।

खुजली : तेज धूप और गर्मी में पसीना ज्यादा आने के कारण त्वचा के रोमकूप बंद हो जाते हैं और खुजली होने लगती है। इससे निजात पाने के लिए पिपरमेंट टी को जमाकर चेहरे पर लगाएं। पिपरमेंट में मैंथोल होता है, जो खुजली को कम करता है, इसे लगाने के बाद चेहरे को थपथपाएं या इस हिस्से पर बेबी पाउडर लगाएं। कैलामिन लोशन का इस्तेमाल रेशेज से राहत दिलाता है। पसीने और खुजली से राहत पाने के लिए हल्के सूती वस्त्र पहनें। इस मौसम में कीड़े-मकोड़ों के काटने का भी खतरा रहता है। किसी जीव जंतु के काटने पर उस हिस्से पर थोड़ा सिरका लगा दें तो दर्द से राहत मिलती है। विषैले जीव के डंक के लिए बेकिंग सोडा, पानी का पेस्ट उस हिस्से पर लगाने से दर्द और खुजली से राहत मिलती है।

अपच और पेट की गड़बड़ियां : गर्मी के मौसम में बासी या खराब खाना खाने से डायरिया और उल्टी की समस्या हो सकती है। कभी-कभी प्रदूषित पानी से भी ऐसा होता है।

सही नहीं है बच्चों में भेदभाव करना

ईर्ष्या, प्रतिस्पर्धा, पक्षपात यह कुछ ऐसी फीलिंग्स हैं जो बच्चों में होती है। जब उन्हें लगता है कि उनके छोटे या बड़े भाई को पैरेंट्स ज्यादा महत्व देते हैं, वे उनसे गुस्सा कम करते हैं, उन्हें डांटते कम हैं, शाबासी भी उन्हें ज्यादा देते हैं। बच्चों में इस तरह की प्रतिस्पर्धा स्वभाविक है। इस प्रकार की मानवीय भावनाएं बड़ों में भी होती हैं। कई बार तो हद तब हो जाती है जब बच्चों में इस तरह के व्यवहार को लेकर उनके मन में गांठ बन जाती है। जो ताउम्र उन्हें परेशान करती हैं। कई बार बच्चे अपने पैरेंट्स का ध्यान आकर्षित करने के लिए या किसी काम में उनकी स्वीकृति पाने के लिए भी ऐसा करते हैं।

- **तुलना न करें :** बच्चों में इस प्रकार की ईर्ष्या, जलन और प्रतिस्पर्धा की सबसे बड़ी वजह होती है जब पैरेंट्स अपने एक बच्चे की तुलना दूसरे के साथ करते हैं। पैरेंट्स की तुलना बच्चों में हीनभावना पैदा करती है और उसमें अपने भाई या बहन के प्रति ईर्ष्या और प्रतिस्पर्धा भी बढ़ जाती है। बच्चों के बीच कई बार हमेशा के लिए रिश्तों में खटास पड़ जाती है।
- **बच्चे को पर्याप्त समय दें :** कई बार पैरेंट्स छोटे बच्चे की परवरिश में इतने व्यस्त हो जाते हैं कि बड़ा बच्चा इससे अपने को उपेक्षित समझने लगता है। उसके साथ अकेले कुछ वक्त गुजारें, उसके साथ खेलें और उसकी फीलिंग्स को जानें। उसके मन में अगर कोई शंका होगी तो वह खुद ब खुद आपसे कहेगा और इस तरह उसे दूसरे भाई- बहनों के और करीब रहने का मौका मिलेगा।
- **गलतफहमी दूर करें :** यदि बच्चा बार-बार अपनी मां से एक ही बात कहता है कि वे उसके भाई या बहन को ज्यादा प्यार करती है, मुझे नहीं करती। उसके दिमाग में यह बात और गहराई तक बैठ जाए तो उसके लिए थोड़ा नजरअंदाज भी करें। उसकी शंका दूर करने के लिए उससे बातचीत करें। दो बच्चों के बीच होने वाली बहस में किसी एक पक्ष लेने की बजाय दोनो को समझाएं। इससे उनके बीच की आयी दूरी धीरे-धीरे खत्म हो जाती है।
- **किसी एक का पक्ष न लें :** बच्चों की आपसी लड़ाई में उनकी बातचीत को समझकर और लड़ाई की वजह जानने के बाद निष्पक्ष निर्णय देने पर किसी न किसी का नाराज होना स्वभाविक है। इसलिए झगड़े की तह में जाकर और किसी एक को कसूरवार ठहराने की बजाय तटस्थ होकर उन्हें अपना झगड़ा स्वयं सुलझाने की सीख दें।
- **बीच में न पड़ें :** बच्चे यदि आपस में बहस कर रहे हैं तो हो सकता है दोनो अपना झगड़ा खुद सुलझा लें। उनकी बातचीत में हस्तक्षेप न करें। हां, अगर गाली गलौज या हाथापाई की नौबत आ जाती है तो बीच-बचाव करें। जिसकी गलती हो उसे सजा भी दें और उन्हें समझाएं कि वे एक दूसरे से बातचीत करके अपनी गलतफहमियों को दूर करें। दोनो को झगड़े के बाद समान रूप से गले लगाएं, प्यार करें।

संपादकीय

हाथकरघा बुनकर संघ की वार्षिक आमसभा में पारदर्शिता, विपणन विस्तार और बुनकर हितों पर अहम फैसले

*हथकरघा बुनकर संघ का 280.33 करोड़ रुपए का अनुमानित बजट पारित, मांग आदेशों में कमी पर चिंता

छत्तीसगढ़ राज्य हाथकरघा बुनकर संघ की वार्षिक आमसभा में वर्ष 2026-27 के लिए 280.23 करोड़ रुपए का अनुमानित बजट ध्वनि मत से पारित किया गया। बैठक में विभिन्न शासकीय विभागों से प्राप्त मांग- आदेशों में लगातार आ रही कमी पर गंभीर चिंता जताई गई और विपणन व्यवस्था को मजबूत बनाने सहित कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए।

आमसभा का आयोजन संघ के अध्यक्ष भोजराम देवांगन की अध्यक्षता में वीआईपी चौक, रायपुर स्थित एक निजी होटल में हुआ। बैठक में रायगढ़, जांजगीर-चांपा, सक्ती, कोरबा, बिलासपुर, रायपुर, धमतरी, बलौदाबाजार, दुर्ग, बालोद, राजनांदगांव, गरियाबंद और कांकेर जिलों से 96 प्रतिनिधि शामिल हुए। बैठक में वर्ष 2024-25 के वित्तीय प्रतिवेदन और वर्ष 2025-26 में 31 जनवरी 2026 तक के वास्तविक आय-व्यय का अनुमोदन किया गया। आगामी वित्तीय वर्ष 2026-27 के लिए 280.23 करोड़ रुपए का वार्षिक बजट पारित करते हुए संघ की गतिविधियों के विस्तार पर सहमति बनी।

आमसभा में विभागों से मिल रहे मांग आदेशों में कमी को संघ के लिए चुनौती बताया गया। प्रतिनिधियों ने सुझाव दिया कि सभी स्तरों पर समन्वित प्रयास कर शासकीय विभागों से अधिक से अधिक मांग आदेश प्राप्त किए जाएं।

साथ ही, वस्त्र उत्पादन नहीं करने वाली निष्क्रिय अथवा अकार्यशील प्राथमिक बुनकर समितियों की सदस्यता समाप्त करने, बुनाई मजदूरी में वृद्धि तथा समितियों के सेवा प्रभार में बढ़ोतरी की मांग भी रखी गई।

ग्रामोद्योग विभाग के सचिव श्याम धावड़े ने बताया कि मुख्यमंत्री की मंशानुसार विभागीय कार्यों में पारदर्शिता लाने के लिए एनआईसी के माध्यम से ऑनलाइन इन्वेंट्री मैनेजमेंट सिस्टम विकसित किया गया है। इससे सभी विभाग हाथकरघा संघ में उपलब्ध वस्त्र स्टॉक की जानकारी ऑनलाइन देख सकेंगे। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार बुनकरों के हित में विभिन्न योजनाएं संचालित कर रही है।

संघ के अध्यक्ष भोजराम देवांगन ने बताया कि मुख्यमंत्री के निर्देश पर प्रदेश के उत्कृष्ट बुनकरों द्वारा निर्मित कोसा और कॉटन वस्त्रों का मूल्य संवर्धन किया जाएगा। इसके लिए निफ्ट डिजाइनरों की सेवाएं ली जा रही हैं और ऑनलाइन मार्केटिंग को बढ़ावा देने के लिए मार्केटिंग कंसल्टेंट नियुक्त किया जा रहा है। इससे हाथकरघा उत्पादों के प्रचार-प्रसार और बिक्री में तेजी आने की उम्मीद है।

संघ द्वारा कोसा और कॉटन वस्त्रों के प्रचार-प्रसार के लिए बस्तर संभाग के जगदलपुर में शोरूम प्रारंभ किया जा चुका है। इसके अलावा अम्बिकापुर, रायगढ़, बिलासपुर, बालोद, डोंगरगढ़ और चन्द्रपुर में शोरूम खोलने की तैयारी है। राज्य के बाहर मुंबई, कोलकाता, दिल्ली और बेंगलुरु जैसे महानगरों में भी ह्यबिलासाह्न शोरूम प्रारंभ करने का प्रस्ताव रखा गया है।

बैठक में जानकारी दी गई कि बुनकरों के प्रतिभावान छात्र-छात्राओं को प्रोत्साहन पुरस्कार, वरिष्ठ बुनकर सम्मान और उच्च शिक्षा प्रोत्साहन राशि प्रदान करने के लिए प्रदेश स्तरीय बुनकर सम्मेलन आयोजित किया जाएगा। इसके लिए मुख्यमंत्री जी से समय लिया जाएगा।

राज्य बुनकर संघ की वार्षिक आमसभा में लिए गए निर्णय के संबंध में ग्रामोद्योग मंत्री गजेंद्र यादव ने कहा कि राज्य सरकार हाथकरघा और ग्रामोद्योग क्षेत्र को आत्मनिर्भर और प्रतिस्पर्धी बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि कोसा एवं कॉटन उत्पादों को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने के लिए विपणन तंत्र को मजबूत किया जा रहा है। मंत्री श्री यादव ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि विभागीय समन्वय बढ़ाकर मांग आदेशों में वृद्धि सुनिश्चित की जाए तथा बुनकरों की आय दोगुनी करने की दिशा में ठोस पहल की जाए।

आमसभा में संघ के पूर्व अध्यक्ष कमल देवांगन, वित्त विभाग के दिवाकर राठौर, सहकारिता विभाग के उमेश तिवारी, ग्रामोद्योग विभाग के अमृत यादव, संयुक्त संचालक हाथकरघा ए. अयाज सहित अन्य अधिकारी एवं कमचारी उपस्थित रहे। विभागीय योजनाओं की जानकारी सचिव श्री एम.एम. जोशी ने दी। आभार प्रदर्शन लेखाधिकारी विलास कुमार झाड़े ने किया तथा संचालन गोविन्द देवांगन ने किया।

मातृभाषा : भारतीय चेतना की जड़, शिक्षा की आत्मा और सांस्कृतिक निरंतरता

21 फरवरी मातृभाषा दिवस पर विशेष

डॉ. अजय आर्य

हर वर्ष 21 फरवरी को विश्व मातृभाषा दिवस मनाया जाता है। यह दिन केवल भाषाओं की विविधता को रेखांकित करने का अवसर नहीं, बल्कि उस सांस्कृतिक चेतना को स्मरण करने का क्षण है, जो मनुष्य की पहचान, उसकी सोच और समाज की आत्मा का निर्माण करती है। वर्ष 1952 में भाषा के अधिकार की रक्षा के लिए जिन विद्यार्थियों ने अपने प्राणों का बलिदान दिया, उनकी स्मृति में यह दिवस आरंभ हुआ। तभी से यह दिन हमें यह प्रश्न पूछने को विवश करता है कि क्या हम अपनी मातृभाषाओं को केवल बोलचाल तक सीमित कर रहे हैं या उन्हें जीवन, शिक्षा और संस्कार का माध्यम भी बना पा रहे हैं। मातृभाषा वह भाषा है, जिसे मनुष्य जन्म के बाद सबसे पहले सुनता है। माँ की लोरी, उसका स्नेहिल संबोधन और घर का सहज वातावरण बच्चे के मन में भाषा की नींव रखते हैं। यही भाषा उसके भावों की पहली अभिव्यक्ति बनती है और आगे चलकर उसके विचारों का आकार गढ़ती है। मनोवैज्ञानिक मानते हैं कि बालक जिस भाषा में स्वप्न देखता है, उसी भाषा में उसका बौद्धिक और भावनात्मक विकास सबसे स्वाभाविक रूप से होता है। मातृभाषा में शिक्षा मिलने से बच्चा भयमुक्त होकर प्रश्न करता है, तर्क करता है और सृजन की ओर बढ़ता है। यही कारण है कि मातृभाषा में सीखना बोझ नहीं, बल्कि आनंद बन जाता है। भारत जैसे बहुभाषी देश में मातृभाषाओं का महत्व केवल शैक्षिक नहीं, बल्कि सांस्कृतिक भी है। हिंदी देश की व्यापक संपर्क भाषा है, जो विविध प्रदेशों को जोड़ती है, किंतु भारत की आत्मा उसकी असंख्य मातृभाषाओं में बसती है।

तमिल की प्राचीन साहित्यिक परंपरा, बंगला की भावुक अभिव्यक्ति, मराठी की ओजस्विता, पंजाबी की जीवंतता और असंख्य लोकबोलियों की सहजता मिलकर भारतीय संस्कृति को बहुरंगी बनाती हैं। इन भाषाओं में लोकगीत, लोककथाएँ, कहावतें, रीति-रिवाज और जीवन-दर्शन सुरक्षित हैं। मातृभाषाएँ वास्तव में पीढ़ियों के अनुभव और स्मृतियों की वाहक होती हैं। महात्मा गांधी मातृभाषा में शिक्षा के प्रबल समर्थक थे। उनका मानना था कि पराई भाषा में दी गई शिक्षा बालक को रटंत प्रणाली तक सीमित कर देती है और उसकी सृजनात्मक शक्ति को कुंठित कर देती है। वे स्पष्ट रूप से कहते थे कि मातृभाषा में शिक्षा न मिलने से बालक का बौद्धिक, नैतिक और मानसिक विकास अधूरा रह जाता है। गांधी जी के लिए मातृभाषा केवल शिक्षण का माध्यम नहीं, बल्कि आत्मनिर्भर भारत और मानसिक स्वतंत्रता का आधार थी। उनका विश्वास था कि जो राष्ट्र अपनी भाषा में सोचता और सृजन करता है, वही सच्चे अर्थों में स्वतंत्र होता है। मातृभाषा की गहनता को समझाने वाली एक अत्यंत अर्थपूर्ण कथा राजा भोज के दरबार से जुड़ी है। कहा जाता है कि एक विद्वान ने दावा किया कि वह अनेक भाषाओं का पारंगत है और कोई उसकी मातृभाषा नहीं पहचान सकता। उसने दरबार को चुनौती दी कि जो उसकी मातृभाषा बताएगा, उसे वह भारी पुरस्कार देगा। भोज के दरबार में अनेक महान विद्वान उपस्थित थे। कालिदास सहित सभी ने उस व्यक्ति से विभिन्न भाषाओं में संवाद किया, किंतु वह प्रत्येक भाषा को इतनी सहजता से बोलता था कि भ्रम और गहरा गया। जब सभी प्रयास निष्फल हो गए और दरबार की प्रतिष्ठा पर प्रश्नचिह्न लगने लगा, तब कालिदास ने एक सरल किंतु गहन युक्ति अपनाई। अगले दिन जब वह विद्वान पुरस्कार की थैली लेकर महल की सीढ़ियाँ उतर रहा था, कालिदास ने उसे अचानक हल्का सा धक्का दे दिया। गिरते समय पीड़ा और आवेग में उसके मुख से जो शब्द निकले, वे उसकी मातृभाषा में थे। कालिदास ने कहा कि संकट की घड़ी में जो भाषा बिना सोचे निकलती है, वही मनुष्य की सच्ची मातृभाषा होती है। यह कथा स्पष्ट करती है कि मातृभाषा तर्क और अभ्यास से नहीं, बल्कि हृदय और संवेदना से जुड़ी होती है। भाषा का मनोविज्ञान भी इसी सत्य की पुष्टि करता है। भय, प्रेम, क्रोध और पीड़ा की अवस्थाओं में मस्तिष्क का वही भाग सक्रिय होता है, जहाँ मातृभाषा गहराई से अंकित रहती है। सीखी हुई भाषाएँ विचार के स्तर पर काम करती हैं, जबकि मातृभाषा भावनात्मक स्तर पर स्वतः प्रकट होती है। यही कारण है कि प्रारंभिक शिक्षा मातृभाषा में देने पर विश्व बल दिया जाता है और नई शिक्षा-नीति भी स्थानीय भाषाओं को शिक्षण माध्यम के रूप में प्रोत्साहित करती है।

भाषा का विषय गंभीर अवश्य है, पर उसमें सहज हास्य भी निहित है, जो कई बार गहरी सच्चाई कह देता है। एक कक्षा में शिक्षक ने पूछा कि मातृभाषा किसे कहते हैं। छात्र ने उत्तर दिया कि जो भाषा माँ बोलती है, वही मातृभाषा है। जब शिक्षक ने पिता की भाषा के बारे में पूछा, तो छात्र बोला कि वह अल्पभाषी है, क्योंकि घर में प्रभाव तो माँ की भाषा का ही अधिक होता है। इस हल्के व्यंग्य में यह संकेत छिपा है कि भाषा सत्ता से नहीं, स्नेह और प्रभाव से चलती है। आज वैश्वीकरण के युग में अनेक भाषाओं का ज्ञान आवश्यक है। विदेशी भाषाएँ हमें विश्व से जोड़ती हैं, नई संभावनाएँ खोलती हैं, किंतु मातृभाषा हमें अपनी जड़ों से जोड़े रखती है। अन्य भाषाएँ अवसर देती हैं, पर मातृभाषा आत्मपहचान देती है। मातृभाषा में सोचने, सीखने और सृजन करने वाला समाज ही आत्मविश्वासी, सृजनशील और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध बन सकता है। 21 फरवरी का यह दिन हमें यह संकल्प लेने का अवसर देता है कि हम अपनी मातृभाषाओं को केवल स्मृति तक सीमित नहीं रखेंगे, बल्कि उन्हें शिक्षा, प्रशासन और दैनिक जीवन में सम्मानजनक स्थान देंगे। भाषा बचेगी तो संस्कृति बचेगी, संस्कृति बचेगी तो राष्ट्र की आत्मा सजीव रहेगी। मातृभाषा केवल शब्दों का संसार नहीं, बल्कि हमारी स्मृतियों, संस्कारों और स्वाभिमान की आधारशिला है।

नक्सल प्रभावित सुकमा से आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ते कदम

आकांक्षा प्रोजेक्ट के तहत 35 युवा रोजगार हेतु चेन्नई रवाना

नक्सल प्रभावित क्षेत्र के रूप में पहचान रखने वाले सुकमा जिले से आत्मनिर्भरता की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल के तहत 35 युवा (16 युवतियां एवं 19 युवक) प्रतिष्ठित बहुराष्ट्रीय कंपनियों में रोजगार प्राप्त करने हेतु चेन्नई के लिए रवाना हुए। यह अवसर मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में युवाओं के सशक्तिकरण की दिशा में संचालित प्रयासों का परिणाम है।

जिला प्रशासन द्वारा कलेक्टर श्री अमित कुमार के मार्गदर्शन में संचालित ह्यआकांक्षा झ सशक्त युवा, सशक्त सुकमाह्न कार्यक्रम के अंतर्गत चयनित युवाओं को लाइवलीहुड कॉलेज परिसर से हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया। इस अवसर पर युवाओं में उत्साह, आत्मविश्वास और उज्ज्वल भविष्य की उम्मीद स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थी।

जिला प्रशासन ने निजी क्षेत्र में रोजगार के ठोस अवसर उपलब्ध कराने के उद्देश्य से चेन्नई स्थित ड्राइव मैनेजमेंट सर्विसेज के साथ एक विशेष एमओयू किया है। इस साझेदारी के माध्यम से सुदूर अंचलों के युवाओं को राष्ट्रीय स्तर

की कंपनियों में रोजगार का अवसर उपलब्ध कराया जा रहा है। यह पहल उन युवाओं के लिए विशेष रूप से लाभकारी सिद्ध हो रही है, जिन्हें अब तक अवसरों की सीमित उपलब्धता के कारण प्रतिस्पर्धात्मक मंच नहीं मिल पाता था।

चयनित युवाओं में 16 युवतियों की भागीदारी महिला सशक्तिकरण की दिशा में एक उल्लेखनीय उपलब्धि है। यह पहल न केवल आर्थिक आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देती है, बल्कि सामाजिक दृष्टिकोण में सकारात्मक परिवर्तन का भी संकेत है। पहली बार जिले से बाहर रोजगार प्राप्त करने का अवसर मिलने से युवाओं में आत्मविश्वास और आत्मसम्मान की भावना सुदृढ़ हुई है। कलेक्टर श्री अमित कुमार ने चयनित अभ्यर्थियों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि ह्यआकांक्षा झ सशक्त युवा, सशक्त सुकमाह्न कार्यक्रम केवल रोजगार उपलब्ध कराने की योजना नहीं, बल्कि युवाओं के आत्मविश्वास को नई उड़ान देने का माध्यम है। उन्होंने कहा कि जिला प्रशासन का उद्देश्य है कि सुकमा का प्रत्येक युवा कौशलयुक्त बने और उसे आजीविका के लिए श्रेष्ठ मंच प्राप्त हो। ग्राम आसिरगुड़ा, कोंटा निवासी सोड़ी बसंती ने बताया कि यह उनके जीवन का गौरवपूर्ण क्षण है। पहली बार घर से बाहर जाकर रोजगार प्राप्त करने का अवसर मिला है, जिससे वे अपने परिवार की आर्थिक सहायता कर सकेंगी। बोरगुड़ा निवासी सोनिया नुप्पो ने जिला प्रशासन की इस पहल को सराहनीय बताते हुए मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय एवं जिला प्रशासन के प्रति आभार व्यक्त किया।

गौरतलब है कि सुकमा जिला प्रशासन भविष्य में भी रोजगार मेलों, कौशल विकास प्रशिक्षण एवं उद्योग साझेदारियों के माध्यम से युवाओं को मुख्यधारा से जोड़ने के लिए प्रतिबद्ध है। यह पहल नक्सल प्रभावित क्षेत्र की पहचान से आगे बढ़कर सुकमा को एक सशक्त, आत्मनिर्भर और अवसरों से परिपूर्ण जिले के रूप में स्थापित करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। अवसर पर महिला आयोग की सदस्य सुश्री दीपिका सोरी, जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री मुकुंद ठाकुर, लाइवलीहुड कॉलेज के प्रभारी अधिकारी श्री कैलाश कश्यप सहित अन्य अधिकारी एवं जनप्रतिनिधि उपस्थित रहे।

1 अप्रैल से नई बार पॉलिसी

अब हाईग्रेड शराब ही परोस सकेंगे रेस्टोरेंट

रायपुर: छत्तीसगढ़ में शराब बिक्री और उपभोग को लेकर सरकार ने बड़ा निर्णय लिया है। छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा जारी नई बार पॉलिसी वर्ष 2026-27 के लिए लागू कर दी गई है, जो 1 अप्रैल 2026 से प्रभावी होगी। इस नई नीति के तहत राज्य के सभी स्तरीय रेस्टोरेंट में अब कम कीमत वाली सी ग्रेड शराब नहीं बेची जा सकेगी। रेस्टोरेंट केवल हाईग्रेड शराब ही ग्राहकों को परोस पाएंगे।

स्तरीय रेस्टोरेंट में गुणवत्ता पर जोर

अब तक रेस्टोरेंट में किस श्रेणी की शराब परोसी जाएगी, इसे लेकर कोई स्पष्ट दिशा-निर्देश नहीं थे। लेकिन नई नीति लागू होने के बाद यह स्थिति बदल गई है। आबकारी विभाग ने स्पष्ट किया है कि स्तरीय रेस्टोरेंट में केवल हाईग्रेड शराब ही उपलब्ध कराई जाएगी। जानकारों के अनुसार, इस फैसले का उद्देश्य रेस्टोरेंट की गुणवत्ता और प्रतिष्ठा बनाए रखना है। साथ ही हाईग्रेड शराब की बिक्री से सरकार को अधिक राजस्व मिलने की संभावना भी है। सस्ती सी ग्रेड शराब हटने से शराब की अवैध आपूर्ति और मिलावट पर भी नियंत्रण लगेगा।

शराब पार्टी की अनुमति की प्रक्रिया हुई आसान

नई बार पॉलिसी में शराब पार्टी और आयोजनों से जुड़े नियमों को भी सरल बनाया गया है। अब होटल, बैंक्वेट हॉल या किसी अन्य स्थल पर शराब पार्टी, कार्यक्रम या कॉन्फ्रेंस आयोजित करने के लिए आबकारी आयुक्त से अनुमति लेने की जरूरत नहीं होगी। यह अधिकार अब सीधे जिले के कलेक्टर को सौंप दिया गया है। इस बदलाव से आयोजकों को बड़ी राहत मिलेगी। जिला स्तर पर ही अनुमति मिलने से समय और प्रक्रिया दोनों में आसानी होगी।

एफएल-5 और एफएल-5क लाइसेंस के नए प्रावधान

वर्ष 2026-27 की नीति के अनुसार, होटल और बैंक्वेट हॉल में शराब परोसने के लिए एफएल-5 और एफएल-5क लाइसेंस जारी किए जाएंगे। लाइसेंस जारी करने से पहले संबंधित जिले का कलेक्टर आयोजन स्थल का नियमानुसार निरीक्षण कराएगा। लाइसेंसधारी को पार्टी या आयोजन से जुड़ी पूरी जानकारी का रिकॉर्ड रखना अनिवार्य होगा। निरीक्षण के दौरान आबकारी विभाग के अधिकारी इन अभिलेखों की जांच करेंगे। शराब पीने और पिलाने की अनुमति दोपहर 12 बजे से रात 12 बजे तक ही मान्य होगी।

बची हुई शराब पर सख्ती, नष्टीकरण अनिवार्य

नई नीति में यह भी साफ कर दिया गया है कि लाइसेंस की अवधि समाप्त होने के बाद बची हुई शराब का पूरा विवरण आबकारी विभाग को देना होगा। यदि उपभोग के बाद बची शराब को जमा नहीं किया गया, तो उसे अवैध माना जाएगा। ऐसी स्थिति में जिला स्तर पर गठित समिति द्वारा बची हुई शराब का नियमानुसार नष्टीकरण किया जाएगा। इस प्रावधान का उद्देश्य अवैध शराब के भंडारण और दुरुपयोग को रोकना है।

अवैध शराब पर लगेगी रोक, बढ़ेगा राजस्व

सूत्रों के मुताबिक, कलेक्टर को अनुमति देने का अधिकार देने के पीछे सरकार की मंशा यह है कि लोग वैध तरीके से शराब पार्टी आयोजित करें। पहले फार्महाउस या निजी स्थानों पर बिना अनुमति शराब परोसने पर कार्रवाई होती थी, लेकिन अब लोग आसानी से लाइसेंस लेकर नियमों के तहत आयोजन कर सकेंगे। सरकार का दावा है कि नई बार पॉलिसी से न सिर्फ अवैध शराब पर नियंत्रण लगेगा, बल्कि राज्य के राजस्व में भी उल्लेखनीय वृद्धि होगी। गुणवत्ता, पारदर्शिता और कानून व्यवस्था को मजबूत करने की दिशा में इसे एक अहम कदम माना जा रहा है।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कुम्हार के चाक पर गढ़ा दीया, पारंपरिक शिल्पकारों से किया आत्मीय संवाद: सरगुजा विकास प्राधिकरण की बैठक के दौरान प्रदर्शनी में दिखा माटी से जुड़ाव

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय का एक आत्मीय और सहज रूप उस समय देखने को मिला, जब उन्होंने कुम्हार के चाक पर स्वयं मिट्टी का दीया और कलश गढ़कर पारंपरिक शिल्प के प्रति सम्मान और जुड़ाव का सशक्त संदेश दिया। अवसर था सरगुजा विकास प्राधिकरण की बैठक का, जिसमें शामिल होने वे कोरिया जिला मुख्यालय बैकुंठपुर पहुंचे थे।

जिला पंचायत सभाकक्ष में आयोजित बैठक के साथ परिसर में स्व-सहायता समूहों एवं स्थानीय उत्पादों की प्रदर्शनी भी लगाई गई थी। इसी प्रदर्शनी में सोनहत विकासखंड निवासी शिल्पकार देवी दयाल प्रजापति इलेक्ट्रिक चाक पर मिट्टी से दीया और कलश बनाने का सजीव प्रदर्शन कर रहे थे। निरीक्षण के दौरान मुख्यमंत्री श्री साय उनके स्टॉल पर पहुंचे और कुछ देर तक उनकी शिल्पकला का बारीकी से अवलोकन किया। कला के प्रति उत्सुकता बढ़ने पर मुख्यमंत्री ने स्वयं चाक पर हाथ आजमाने की इच्छा व्यक्त की। शिल्पकार की सहमति से उन्होंने घूमते हुए चाक पर रखी गीली मिट्टी को हाथों से साधा और देखते ही देखते उसे सुंदर दीये का आकार दे दिया। मुख्यमंत्री की सहज कुशलता देखकर स्वयं शिल्पकार भी आश्चर्यचकित रह गए, वहीं उपस्थित जनसमूह ने तालियों की गड़गड़ाहट के साथ इस क्षण का स्वागत किया।

मुख्यमंत्री श्री साय ने इस दौरान शिल्पकार देवी दयाल प्रजापति से उनके व्यवसाय, आय और परिवार की जानकारी ली तथा उन्हें शासन की विभिन्न स्वरोजगार एवं कारीगर हितैषी योजनाओं का लाभ उठाने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार पारंपरिक शिल्प, कारीगरों और ग्रामीण आजीविका को सशक्त बनाने के लिए निरंतर प्रयासरत है, ताकि स्थानीय कला और हुनर को नई पहचान और बाजार मिल सके। इस अवसर पर कृषि मंत्री रामविचार नेताम, स्वास्थ्य मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल, खाद्य मंत्री दयाल दास बघेल, महिला एवं बाल विकास मंत्री श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े, सरगुजा विकास प्राधिकरण की उपाध्यक्ष श्रीमती गोमती साय, सांसद चिंतामणि महाराज, विधायक भैयालाल राजवाड़े, कलेक्टर चंदन त्रिपाठ आदि उपस्थित थे।

जल संरक्षण की दिशा में निरंकारी मिशन का सशक्त स्टेप 'प्रोजेक्ट अमृत' का चौथा चरण

भिलाई में यह अभियान सुबह 7 बजे से सेक्टर 8 स्थित संत निरंकारी सत्संग भवन के पास प्रारम्भ किया जाएगा

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

जल सेवा साधना बन जाये और प्रकृति के प्रति संवेदना मूल मंत्र बन जाये तब एक पावन संकल्प जन्म लेता है। मानव सेवा और लोक कल्याण की दिव्य चेतना को साकार रूप प्रदान करने संत निरंकारी मिशन द्वारा प्रोजेक्ट अमृत के अंतर्गत 'स्वच्छ जल,स्वच्छ मन'अभियान का चौथा चरण का शुभारंभ सद्गुरु माता सुदीक्षा जी महाराज के निर्देशानुसार 22 फरवरी रविवार को समस्त भारत मे प्रारम्भ किया जा रहा है।इसी कड़ी में भिलाई में यह अभियान सुबह 7 बजे से सेक्टर 8 स्थित संत निरंकारी सत्संग भवन के पास प्रारम्भ किया जाएगा।

इस अभियान के तहत नहर व नहर के आसपास सफाई की जाएगी।

ब्रांच संयोजक श्री सतपाल सिंह सैनी जी ने बताया कि यह अभियान देश भर में 1500 से अधिक स्थानों पर एक साथ आयोजित किया जा रहा है।इस अभियान के माध्यम से मानव जगत को जल संरक्षण व स्वच्छता संदेश देना है। उन्होंने बताया कि निरंकारी बाबा हरदेव सिंह जी महाराज की प्रेरणादायी शिक्षाओं को आत्मसात करते हुए 2023 में संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार के सहयोग से प्रोजेक्ट अमृत का सूत्रपात किया गया था।नदियों,तालाबो,कुंवो, नहर,झरनों जैसे प्राकृतिक जल स्त्रोतों के संरक्षण व संवर्धन हेतु समर्पित इस जनांदोलन ने अपने तीन चरणों मे सेवा,समर्पण व सहभागिता की अदभुत मिसाल कायम की है।

ज्ञात हो कि पिछले वर्ष शिवनाथ नदी दुर्ग में अभियान के तहत सफाई की गई थी।

इस वर्ष सेक्टर 8 में सुबह 7 बजे सैकड़ो अनुयायी इस अभियान में अपनी सेवाएं देकर स्वच्छता का संदेश देंगे। सद्गुरु माता सुदीक्षा जी का संदेश यही है कि स्वच्छ जल स्वच्छ मन अभियान मानव को प्रकृति ,समाज व आत्मा से जोड़ते हुए करुणा संतुलन व सौहार्द से परिपूर्ण भविष्य की ओर मार्गदर्शन करता है। प्रेस विज्ञप्ति के माध्यम से सूचना सहायक जनसम्पर्क अधिकारी शंकर सचदेव ने दी।

खास खबर

स्वास्थ्य जांच एवं जागरूकता शिविर का हुआ आयोजन

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

छतीसगढ़ शासन के श्रम मंत्री श्री लखनलाल देवागंन के निर्देश पर कमर्चारी राज्य बीमा योजना, (श्रम विभाग) अंतर्गत पंजीकृत बीमित (श्रमिकों) के प्रतिमाह स्वास्थ्य जाँच एवं जागरूकता शिविर का आयोजन करने के निर्देश दिये गये थे, जिसके परिपालन में 19 फरवरी को मैत्री विद्या निकेतन, विद्यालय, रिसाली-भिलाई में कमर्चारी राज्य बीमा सेवायें रिसाली मरौदा केन्द्र द्वारा श्रमवीर स्वास्थ्य जाँच शिविर आयोजित किया। बीमा चिकित्सा पदाधिकारी से प्राप्त जानकारी अनुसार शिविर में 90 बीमित व्यक्ति (श्रमिकों) का स्वास्थ्य संबंधी जॉच कर औषधि का वितरण किया गया। शिविर में बीमारी से बचने हेतु जागरूक रहने के संबंध में आवश्यक जानकारी दिया गया। कमर्चारी राज्य बीमा सेवायें, (श्रम विभाग) रिसाली मरौदा केन्द्र प्रभारी बीमा चिकित्सा पदाधिकारी डॉ (श्रीमती) सूर्या वर्मा के नेतृत्व में स्टॉफ नर्स श्रीमती किरण, फॉर्मासिस्ट, श्रीमती अनुराधा बघेल, सहायक मो. तैयुब अंसारी, श्री धनजंय वर्मा, श्री हुमन की टीम ने कमर्चारियों का स्वास्थ्य परीक्षण एवं जागरूगता संबंधी जानकारी देने हेतु अपनी सेवायें दी। श्रमवीर स्वास्थ्य जाँच शिविर कार्यक्रम के आखिरी में संस्था द्वारा आभार व्यक्त किया गया।

जब रेल के नाम पर भिलाई की अस्मिता दांव पर लग गई थी, बाजपेयी ने की थी जोरदार पैरवी

वरिष्ठ पत्रकार मुहम्मद जाकिर हुसैन के फेसबुक वाल से

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

भिलाई। भिलाई स्टील प्लांट के अधिशासी निदेशक (वर्क्स) रहे बृजमोहन कुमार बाजपेयी ने 18 फरवरी 2026 की शाम इस दुनिया को अलविदा कह दिया। आज मुक्तिधाम में उन्हें विदाई देने बीएसपी के ऐसे बहुत से अफसर मुक्तिधाम में मौजूद थे, जो उनके दौर के साक्षी थे।

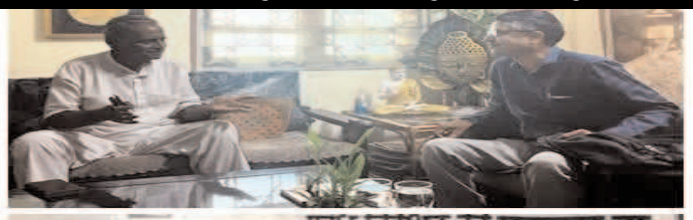

अपने राजनांदगांव वाले (स्व.) शिवराज जैन के बाद बीएमके बाजपेयी ऐसे दूसरे ठेठ छत्तीसगढ़िया इंजीनियर थे, जो शीर्ष पर रहे और जिन्होंने भिलाई को लेकर अपना सर्वाधिक योगदान दिया। वैसे तो स्व. बाजपेयी के बताने के लिए बहुत कुछ है। पिछले ही साल उनकी एक किताब भी प्रकाशित हुई। फिर भी कुछ बातें यहां मुख्तसर तौर पर..

हाल के दो बरस में उनसे दो-तीन मरतबा मैनें इंटरव्यू किए थे। जिससे उनके दौर के घटनाक्रम का डाक्यूमेंटेशन हो सके।इस दौरान उन्होंने दिल खोल कर बातें की थी।

पहला वाक्या खन्ना रेल दुर्घटना का। पंजाब में उत्तरी रेलवे के खन्ना-लुधियाना खंड पर खन्ना के पास 26 नवंबर 1998 को एक बड़ा रेल हादसा हुआ था। इस हादसे में 250 से ज्यादा जानें गई थी।

तब केंद्र सरकार ने हाईकोर्ट के जज जस्टिस जीसी गर्ग की अध्यक्षता वाले एक सदस्यीय आयोग को जांच की जिम्मेदारी सौंपी थी। जांच आगे बढ़ी तो अचानक देखते ही देखते बात भिलाई की रेल पटरियों पर आ गई। पूरा माहौल ऐसा बनाया गया कि इस हादसे के लिए भिलाई की रेल पटरियां जिम्मेदार है। षड़यंत्र बड़े ही ऊंचे स्तर का था।

दरअसल, तब रेल उत्पादन में निजी क्षेत्र भी आगे आ रहा था और भिलाई के ही आला अफसर यहां से वहां ज्वाइन कर रहे थे। लिहाजा, अफवाहों का बाजार गर्म था। तब मेरे शहर के एक-दो पत्रकारों ने भी बीएसपी के कुछ ह्यबागीह्नअफसरों के प्रभाव में आकर इस फर्जीवाड़े को आगे बढ़ाने की कोशिश की थी। खैर, जांच पूरी हुई और आयोग के अध्यक्ष के नाते जस्टिस गर्ग अपना फैसला लिखवाने वाले थे। तब तक बीएमके बाजपेयी बीएसपी के ईडी वर्क्स बन चुके थे।

जब उन्हें पता लगा कि फैसला लिखा जाने वाला है तो उन्होंने अपने माध्यमों से जस्टिस गर्ग से संपर्क साधा और समय मिलते ही आनन-फानन में दिल्ली पहुंचे और जस्टिस गर्ग के सामने भिलाई की रेल पर प्रेजेंटेशन दिया।

बाजपेयी बताते थे, तब जस्टिस गर्ग ने महज 15 मिनट का वक्त दिया था लेकिन जब उन्होंने दलीलें रखना शुरू कीं तो डेढ़ घंटे से भी ज्यादा देर तक सारी बातें सुनते रहे। तब बाजपेयी ने उन्हें बताया था कि पूरे हिंदुस्तान में जहां भी ट्रेन दौड़ रही हैं, वहां भिलाई में बनीं शत-प्रतिशत पटरियां लगी हैं।

फिर अमेरिका, कोरिया से लेकर दुनिया के तमाम देशों में भिलाई की पटरियां गई हैं। कहीं से भी किसी भी हादसे में भिलाई की पटरियों की क्वालिटी को लेकर कोई बात नहीं आई है। इस प्रस्तुतिकरण के बाद जस्टिस गर्ग ने फैसला लिखवाने का काम रोक दिया और सीधे भिलाई स्टील प्लांट की रेल एंड स्ट्रक्चरल मिल देखने और उत्पादन तकनीक से जुड़ी जरूरी जानकारियां लेने की बात कही। फिर जस्टिस गर्ग तीन दिन के दौरे पर अपनी टीम के साथ भिलाई आए, उन्होंने तमाम जानकारी ली। ईडी वर्क्स बीएमके बाजपेयी की सूझबूझ का नतीजा था कि आगे भिलाई की रेलपांत पर कोई सवाल नहीं उठा।

एक और बात बताते चलूं। बीएमके बाजपेयी को ह्यक्रॉपह्न का जादूगर कहा जाता था। अपने कर्मियों से संवाद की यह पहल क्रिएटिंग रिस्पांसिबल आगर्नाइजेशन ऑफ प्युपिल (क्रॉप) ऐसे वक्त में हुई थी, जब अटलबिहारी बाजपेयी के नेतृत्व वाली राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) की केंद्र सरकार ने छत्तीसगढ़ में स्थापित सार्वजनिक उपक्रम बालको कोरबा को बेच दिया था।

इधर बीएसपी के साथ-साथ 'सेल' की भी हालत बहुत ज्यादा नाजुक हो चली थी। मकान बेचने की नौबत आ चुकी थी। कंपनी के 'बीआईएफआर' में जाने की चर्चा थी।

कर्मियों में डर था कि बाल्को के बाद अगला नंबर भिलाई का है। कर्मियों के इस गिरे हुए मनोबल को उपर लाने का बीड़ा तब ईडी वर्क्स बीएमके बाजपेयी ने उठाया था।

उन्होंने ह्यक्रॉपह्न के नाम रोजाना कर्मियों से संवाद शुरू किया। उन्होंने 54 दिन में तब करीब 28 हजार कर्मियों से सीधा संवाद किया था। तब बीटीआई के 3 हॉल में 800-800-800 लोगों का बैच रोज जुटता था और इनमें दूसरे तमाम अफसरों के साथ बीएमके बाजपेयी भी कर्मियों से सीधे बात करते थे।

इसका ब्यौरा फिर कभी..वैसे स्व. बाजपेयी की पहल ह्यक्रॉपह्न ने वाकई में सकारात्मक परिणाम दिए थे। इस ह्यक्रॉपह्न का एक और पहलू है, जो कम लोगों को मालूम है। बीएमके बाजपेयी के ह्यक्रॉपह्न की गूंज राजधानी रायपुर में तत्कालीन मुख्यमंत्री अजीत जोगी तक भी पहुंची थी। जोगी 2003 के विधानसभा चुनाव के पहले कुछ ऐसा ही संवाद सत्र कांग्रेसजनों के लिए आयोजित करना चाहते थे। इसके ऐवज में जोगी चाहते थे कि बाजपेयी कहीं से भी कांग्रेस की टिकट पर चुनाव लड़ लें। हालांकि इस पर बात आगे नहीं बढ़ी थी। एक और किस्सा जो अक्सर बाजपेयी बताते थे, वह स्टील मेल्टिंग शॉप-2 से जुड़ा है। जब 40 लाख विस्तारीकरण में प्लेट मिल चालू हो चुकी थी लेकिन एसएमएस-2 में देरी हो रही थी। दिल्ली से स्वाभाविक दबाव भी था। तब के एमडी निमाई कुमार मित्र के सामने रशियन एक्सपर्ट ने दिसंबर 1984 तक की मियाद बता दी थी। लेकिन तब बीएमके बाजपेयी ने तमाम आंकलन कर सीधे कह दिया था कि 30 जुलाई को कमीशनिंग कर लेंगे। हालांकि तब उनकी बात पर उपरी मैनेजमेंट बहुत गंभीर नहीं हो पाया था लेकिन जब बाजपेयी ने पूरी बात रखी तो मैनेजमेंट ने भी आगे बढ़ने के निर्देश दिए। इसके बाद स्टील मेल्टिंग शॉप-2 का पहला एलडी कनवर्टर एमडी निमाई कुमार मित्र के हाथों 29 जुलाई 1984 को शुरू करवाया। फिर अगले दिन 30 जुलाई को पहला स्लैब कास्ट किया गया। इस उपलब्धि में स्व. बाजपेयी का सर्वाधिक योगदान रहा।

स्व. बीएमके बाजपेयी के बारे में बताने को बहुत कुछ है। सेवानिवृत्ति के बाद वे लगातार सामाजिक गतिविधियों में सक्रिय थे। उनका योगदान भिलाईवासी कभी भूल नहीं पाएंगे।

(यहां फोटो पिछले साल उनके इंटरव्यू के दौरान उन्हीं के घर की है और नीचे ब्लैक एंड वाइट फोटो 1999 की तब के एमडी विक्रांत गुजराल की प्रेस कान्फ्रेंस की है। तब भिलाई स्टील प्लांट के आला अफसर अपने पूरे ह्यमंत्रिमंडलह्न के साथ साल में एक बार प्रेस से रूबरू होते थे और हर सवाल का सामना करते थे।)

राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन अंतर्गत भर्ती के 5 पदों की मेरिट सूची जारी, 23 फरवरी को काउंसलिंग

दुर्ग। राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के अंतर्गत संविदा भर्ती के तहत 5 पदों की लिखित व कौशल परीक्षा 19 फरवरी 2025 को शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर पीजी आटोनॉमस महाविद्यालय दुर्ग में आयोजित की गई थी। एमओ आयुष, रेडियोग्राफर, लेब सहायक, नेत्र सहायक व डेंटल सहायक पदों की अनंतिम मेरिट/चयन सूची जारी कर दी गई है। अभ्यर्थी परिणाम जिले की वेबसाइट दुर्ग जिला प्रशासन पर देख सकते हैं।

मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी से प्राप्त जानकारी अनुसार काउंसलिंग 23 फरवरी 2026 को दोपहर 12 बजे कार्यालय मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी में होगी। चयनित अभ्यर्थी प्रातः 11 बजे तक उपस्थित होना सुनिश्चित करें।

राजनीतिक दलों की बैठक 21 फरवरी को

दुर्ग। भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार निर्वाचक नामावलियों का विशेष गहन पुनरीक्षण अहर्ता तिथि 01.01.2026 की स्थिति में मतदाता सूची का अंतिम प्रकाशन 21 फरवरी 2026 दिन शनिवार के संबंध में कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री अभिजीत सिंह की अध्यक्षता में 21 फरवरी 2026 को प्रातः 10.30 बजे कलेक्ट्रेट सभाकक्ष दुर्ग में मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों हेतु बैठक का आयोजन किया गया है। उक्त बैठक में सभी मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों के जिला अध्यक्ष/सचिव को स्वयं अथवा अपने प्रतिनिधि के माध्यम से उपस्थित होने का अनुरोध किया गया है।

सभी जिलों के कलेक्टर जुड़े वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से

कलेक्टर श्री अभिजीत सिंह ने अभियान के तहत किए गए कार्यो और गतिविधियों की दी जानकारी

दुर्ग। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय और केन्द्रीय जल शक्ति मंत्री श्री सी.आर. पाटिल की अध्यक्षता में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से राज्य के सभी जिलों के कलेक्टरों की बैठक आयोजित की गई। बैठक में ह्लजल संचय जन भागीदारी 2.0ह्व अभियान के क्रियान्वयन की समीक्षा की गई। मुख्यमंत्री श्री साय एवं केन्द्रीय मंत्री श्री पाटिल वर्चुअल जुड़े। इस दौरान बिलासपुर, दुर्ग और सूरजपुर जिले के कलेक्टरों ने अपने-अपने जिलों में अभियान के तहत संचालित कार्यों और गतिविधियों की जानकारी प्रस्तुत की।

कलेक्टर श्री अभिजीत सिंह ने बताया कि पहले

चरण जे.एस.जे.बी. 1.0 में 5606 जल संरचनाओं के निर्माण किया गया था। वहीं अब जल संचय जन भागीदारी अभियान से 2.0 के अंतर्गत गंभीर जल संकट वाले क्षेत्रों का चिन्हांकन मनरेगा, आर.बी.एस. जल संसाधन विभाग और लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग (पीएचई) के तकनीकी अमले द्वारा किया गया है और अब तक 18,225 रिचार्ज संरचनाओं का निर्माण किया जा चुका है। जिससे भू-जल स्तर में औसतन 4.18 मीटर वृद्धि हुई। जनभागीदारी से जागरूकता के अंतर्गत ह्लएकेच गोठ एकेच पानीह्व, ह्लबुंद-बुंद बचाबो पानीह्व, ह्लएक सोख्ता संतान के नामह्व और ह्लमोर गांव मोर पानीह्व जैसे जन-जागरूकता कार्यक्रम प्रारंभ किए गए हैं।

केन्द्रीय जल शक्ति मंत्री श्री सी.आर. पाटिल ने छत्तीसगढ़ में जल संरक्षण के क्षेत्र में हो रहे नवाचारों और कार्यों की सराहना की। उन्होंने सभी कलेक्टरों को मनरेगा के तहत जल संचय कार्यों के लिए प्राप्त राशि का पूर्ण एवं प्रभावी उपयोग सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

सामुदायिक भवन प्रकरण ने पकड़ा तूल पहले उठे सवाल, अब निगम की रिपोर्ट पर नया विवाद

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

सांसद निधि से निर्मित सामुदायिक भवन को लेकर पहले से चल रहा विवाद अब एक नए मोड़ पर पहुँच गया है। पूर्व में प्रकाशित समाचार में भवन के उपयोग, निर्माण स्थल एवं अभिलेखीय तथ्यों को लेकर गंभीर प्रश्न उठाए गए थे। अब इसी प्रकरण में कलेक्टर कार्यालय को भेजी गई नगर पालिक निगम की रिपोर्ट पर भी सवाल खड़े होने लगे हैं।

ज्ञात हो कि पहले प्रकाशित समाचार में यह मुद्दा प्रमुखता से सामने आया था कि सांसद निधि से बना सामुदायिक भवन कथित रूप से अपने मूल उद्देश्य के अनुरूप उपयोग में नहीं है तथा खसरा एवं निर्माण संबंधी विवरणों में विसंगतियों के आरोप लगाए गए थे। शिकायतकर्ताओं द्वारा इस मामले में दस्तावेजों सहित आपत्तियाँ दर्ज कराते हुए निष्पक्ष जाँच की मांग की गई थी।

इसी क्रम में शिकायत जिलाधीश के समक्ष प्रस्तुत की गई, जिसके बाद कलेक्टर कार्यालय द्वारा नगर पालिक निगम से तथ्यात्मक जाँच एवं प्रतिवेदन मांगा गया। आरोप है कि निगम प्रशासन ने अपेक्षित विस्तृत जाँच किए बिना ही जवाब प्रेषित कर दिया। निगम के जनसूचना अधिकारी द्वारा भेजे गए उत्तर में उल्लेख किया गया कि पूर्व में 13 पृष्ठों की जानकारी उपलब्ध कराई जा चुकी है और ह्लविभाग में अन्य जानकारी उपलब्ध नहीं है।ह्व

लास्ट - पेज
दुर्ग, बुधवार 11 फरवरी 2026
8

लोकार्पण से पहले ही उठे बड़े सवाल, खसरा नंबर में हेरफेर का आरोप

सांसद निधि से बना सामुदायिक भवन बना किराये की दुकान?

नरेन्द्र डाकलिया / राजनांदगांव

सांसद निधि योजनांतर्गत वार्ड क्रमांक 26 में सामुदायिक भवन निर्माण के लिए 2.50 लाख की राशि नगर निगम राजनांदगांव को दी गई थी, लेकिन यह भवन आज तक न तो सार्वजनिक उपयोग में आया, न ही इसका लोकार्पण हुआ। उलटे, इस भवन को लेकर खसरा नंबर में हेरफेर, सार्वजनिक कुएँ को ढंकने और भवन में किरायेदार बैठाने जैसे गंभीर आरोप सामने आए हैं।

इस पूरे मामले को लेकर समाजसेवी राजकुमार गुप्ता, पूर्व पार्षद जितेन्द्र शर्मा एवं पूर्व पार्षद राधा अशोक खंडेलवाल ने सांसद संतोष पांडे से लिखित रूप में निरीक्षण, लोकार्पण एवं उच्चस्तरीय जांच की मांग की है।

पहले रजिस्ट्री डाक से भेजा गया पत्र, फिर भी कार्रवाई शून्य

जांच बिंदुओं में चौंकाने वाले तथ्य

वर्तमान स्थिति में कुआँ पूरी तरह ढंका हुआ

सांसद से सीधी मांग

जिले में प्रतिबंधित गुटखा, तंबाकू

जनसेवा, स्वास्थ्य और खेल क्षेत्र में सक्रिय भूमिका निभा रहे इंद्रजीत

शिकायतकर्ता पक्ष का कहना है कि यह उत्तर तथ्यविरुद्ध एवं अपूर्ण है। उनका दावा है कि जिन बिंदुओं पर स्पष्ट सत्यापन एवं जाँच आवश्यक थी, उन पर कोई ठोस जांच प्रक्रिया अपनाए बिना निष्कर्षात्मक रिपोर्ट भेज दी गई। इससे यह प्रश्न उठ रहा है कि क्या उच्च प्रशासनिक स्तर से मांगी गई जाँच औपचारिकता तक सीमित रह गई।

स्थानीय स्तर पर नागरिकों और सामाजिक कार्यकर्ताओं के बीच भी इस प्रकरण को लेकर चर्चा तेज है। पारदर्शिता की मांग करने वाले समूहों का कहना है कि सार्वजनिक धन से निर्मित परियोजनाओं में रिकॉर्ड, स्थल एवं उपयोग संबंधी तथ्यों का स्पष्ट और वस्तुनिष्ठ परीक्षण आवश्यक है।

कानूनी जानकारों के अनुसार, यदि किसी शासकीय संप्रेषण में गलत या भ्रामक जानकारी भेजे जाने के आरोप हैं, तो सक्षम प्राधिकारी द्वारा स्वतंत्र जाँच कराई जा सकती है। हालांकि अंतिम निर्णय प्रशासनिक जाँच के निष्कर्षों पर निर्भर करेगा।

इस संबंध में नगर पालिक निगम से आधिकारिक प्रतिक्रिया प्राप्त नहीं हो सकी। शिकायतकर्ता पक्ष ने कलेक्टर से पुनः निष्पक्ष जाँच, अभिलेखों के सत्यापन तथा जिम्मेदार अधिकारियों के विरुद्ध उचित कार्वाई की मांग की है।

अब देखना यह होगा कि पहले उठे सवालों और वतर्मान विवादित रिपोर्ट के बाद जिला प्रशासन इस मामले में क्या रुख अपनाता है।

किसान कल्याण मंत्री ।रामविचार नेताम ने कृषक प्रशिक्षण हॉल व छात्रावास का किया लोकार्पण

दुर्ग। कृषि विकास एवं किसान कल्याण मंत्री श्री रामविचार नेताम ने आज रूआबांधा स्थित कार्यालय क्षेत्रीय कृषि प्रसार एवं प्रशिक्षण संस्थान परिसर में राष्ट्रीय कृषि विकास योजना अंतर्गत नवनिर्मित कृषक प्रशिक्षण हॉल एवं कृषक छात्रावास का लोकार्पण किया।

मंत्री श्री नेताम ने कहा कि प्रशिक्षण हॉल एवं छात्रावास दूरस्थ क्षेत्रों से आने वाले किसानों के लिए सुविधाजनक होगा, जिससे वे आवासीय प्रशिक्षण लेकर नई तकनीकों को अपनाएंगे। साथ ही किसानों की आय बढ़ाने और उन्हें आर्थिक रूप से सशक्त बनाने हेतु नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने के निर्देश दिए।

इस अवसर पर दुर्ग ग्रामीण विधायक श्री ललित चंद्राकर, संभागायुक्त श्री एस.एन.राठौर, बीज एवं कृषि विकास निगम अध्यक्ष श्री चंद्रहास चंद्राकर तथा तेलघानी बोर्ड अध्यक्ष श्री जितेन्द्र साहू, इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय कुलपति डॉ. गिरीश चंदेल, कृषि संचालनालय से संयुक्त संचालक श्री आर.एल. धुरंधर, संयुक्त संचालक कृषि दुर्ग श्रीमती गोपिका गबेल व क्षेत्रीय संचालक श्रीमती ऋति तिवारी सहित विभागीय अधिकारी-कमर्चारी मौजूद रहे।

अब अपनाओ नई हॉबीज

सिंगिंग, डांस, पेंटिंग...इसी तरह की हॉबीज तुम्हारी और तुम्हारे दोस्तों की होंगी। पर अगर तुम कुछ नई तरह की हॉबीज अपनाओगे तो तुम सबसे हटकर बन जाओगे। वैसे भी आने वाला समय तकनीकी युग होगा और उस समय तुम्हारी आज की हॉबीज ही तुम्हें सफलता दिलाएंगी। तुम अपनी हॉबीज में क्रिएटिविटी डालकर ऐसा कर सकते हो या नई हॉबीज भी अपना सकते हो। तो क्या हैं ये हॉबीज और इनके फायदे ...

स्विमिंग को बनाओ हॉबी

स्विमिंग से पूरे शरीर का व्यायाम होता है। यह जोड़ों पर दबाव डाले बगैर सांस, रक्त संचार में सुधार लाती है। जो बच्चे स्विमिंग पसंद करते हैं, उन्हें इससे बहुत लाभ मिलता है। ये लाभ उनकी बॉडी के लिए बहुत उपयोगी होता है। दरअसल, जब तुम स्विमिंग करते हो तो उस दौरान पूरे शरीर का मूवमेंट होता है। यह मूवमेंट शरीर में लचीलापन उत्पन्न कर देता है और इससे हृदय और फेफड़े स्वस्थ बने रहते हैं। इनसे शरीर में मजबूती आती है। यही नहीं, जिनकी लंबाई कम होती है, उनकी स्विमिंग करने से लंबाई भी बढ़ जाती है।

बारिश हो तो उतारो कैनवास पर

तुम में ऐसे बहुत से होनहार होंगे, जो कुछ देख कर कैनवास पर उसे हूबहू वैसा ही उतार देते हैं। लेकिन अधिकतर मामलों में तुम किसी बुक से नकल कर वह ड्राइंग बनाते हो। क्यों न अपनी इस हॉबी को अलग ढंग से आगे बढ़ाया जाए। जैसे अगर बारिश हो रही हो तो बाहर के नजारे को कैनवस पर उतारना शुरू करो। घर की बालकनी या खिड़की से बाहर ताक-झांक करो। तुम देखोगे कि बाहर एक से एक मजेदार सीन नजर आएंगे। सब्जी वाला भैया रेहड़ी दौड़ा कर सब्जियां बचा रहा होगा तो कुछ लोग एक ही छतरी से बारिश की बूंदों से बचने की कोशिश कर रहे होंगे। बस उस दृश्य को कैनवास पर कैद कर लो।

मनी मैनेजमेंट सीखो

जिस तरह घर के खर्च के लिए मम्मा बजट बनाती हैं, तुम भी अपने सारे खर्चों का एक रिकॉर्ड रख सकते हो। एक पेपर लो, उसे दो भागों में बांट दो। एक तरफ लिखो आमदनी, दूसरी ओर खर्चा। जब भी महीने में तुम्हारे पास पैसा कहीं से भी आए, उसे तारीख के साथ दर्ज करो। दूसरी ओर वह पैसा कहां गया, उसका भी हिसाब रखो। जब तुम्हें लगे कि कोई फिजूलखर्च किया है तो उसे लाल पैन से अंडरलाइन कर दो, ताकि आगे ऐसा न हो।

तकनीक को अपनाओ

आज जहां हर रोज नए-नए गैजेट्स आ रहे हैं, वहीं कुछ बड़ों के लिए उन्हें समझना भी मुश्किल होता है, लेकिन तुम छोटे उस्ताद तो उन गैजेट्स के सभी एप्लिकेशन झट से ढूंढ लेते हो और सभी फीचर का अच्छे से इस्तेमाल करना भी जानते हो।

अगर तुम्हारे अंदर भी यह हुनर है तो तकनीक के सहारे काम को जल्दी से जल्दी करना अपनी हॉबीज में शामिल कर लो। जैसे अपने कंप्यूटर को वाइरस से बचाने के लिए सॉफ्टवेयर अपडेशन तकनीक सबको बताओ। अधिक से अधिक तकनीक ज्ञान हासिल करना जब तुम अपनी हॉबी में शामिल कर लोगे तो देखोगे कि सभी तुम्हें अपना दोस्त बनाना चाहेंगे और तुम्हारे मम्मी-पापा तो दूसरों से तारीफ करते नहीं थकेंगे।

बन जाओ हैरी पॉटर

हैरी पॉटर का नाम सुनते ही तुम्हें जादुई दुनिया की याद आ जाती होगी। बच्चों के अलावा बड़े भी उसकी किताबों व फिल्मों में रुचि दिखाते हैं। दरअसल हैरी पॉटर की जादुई शक्ति अपनी ओर खींचती है। तुमने कभी अपने सामने तो कभी फिल्मों में बहुत मैजिक शो देखे होंगे। मन में यह सवाल बार-बार उठता रहता है कि आखिर जादूगर अंकल ने कैसे उस व्यक्ति को आसमान में उछाल दिया, क्या उस छड़ी में कुछ जादुई शक्ति थी? अगर तुम इसे अपनी हॉबीज में शामिल करना चाहते हो तो मैजिक शो को करीब से देखो। संबंधित किताबें पढ़े।

खेलों को करीब से जानो

किसी खेल विशेष की तरफ तुम्हारा झुकाव जरूर होगा। बस तुम्हें यह पहचानना है कि किसमें बेहतर कर सकते हो और किसमें सुधार की गुंजाइश है। महानगर में बच्चों और युवाओं में क्रिकेट को लेकर जबर्दस्त खुमार है। लेकिन इसके लिए जरूरत होती है किसी योग्य गुरु या कोच की। इन दिनों तुम्हारी छुट्टियां भी चल रही हैं। क्यों न इन्हीं दिनों अपनी इन हॉबीज को आगे बढ़ाया जाए। अपनी ही सोसाइटी के उन दोस्तों को पहचानो, जो इस खेल में समान रुचि रखते हैं। बस फिर शाम किसी पार्क में या किसी कोच के माध्यम से अपने खेल में निखार लाओ। हो सकता है कि कल तुम्हारी खेलने की यह हॉबी तुम्हें बहुत बड़ा खिलाड़ी ही बना दे।

खाली बैठे हो तो.. कुछ क्रिएटिव करो

प्यारे बच्चों, नोलॉजी नामक इस वेबसाइट का नाम सुनकर जरूर तुम्हें फनी लगा होगा। जैसा नाम है, वैसा ही इसका काम भी है। अपने नाम के अनुरूप ही यहां पर तुम्हारे लिए ढेर सारे फन और मस्ती का इंतजाम है।

आर्ट्स एंड क्राफ्ट्स में बढ़ाओ ज्ञान

वेबसाइट के क्राफ्ट्स सेक्शन में काफी कुछ है। इस सेक्शन पर क्लिक कर तुम अपनी आर्ट्स एंड क्राफ्ट्स क्रिएटिविटी में निखार ला सकते हो। यहां पर क्लिक करने पर तुम्हें तरह-तरह के डिजाइन और कई तरह के आकर्षक और क्रिएटिव सामान बनाने के बारे में जानकारी मिलेगी। टिशू पेपर, पेंसिल, चार्ट पेपर, ग्लू आदि का इस्तेमाल कर तुम कई तरह के आकर्षक कार्ड, पेंटिंग, टीशर्ट पेंटिंग आदि के बारे में सीख सकते हो।

जूनियर मास्टर शेफ की ट्रेनिंग लो यहां

यह वेबसाइट तुम्हें जूनियर मास्टर शेफ बना सकती है। रेसिपी के सेक्शन पर क्लिक करने पर तुम्हें ढेर सारी रेसिपी के बारे में जानकारी मिलेगी। इतने सहज तरीके से यहां पर रेसिपी बनाने के बारे में बताया गया है कि तुम एक बार पढ़कर ही किचन में ट्राई करने चले जाओगे। यहां से ट्रेनिंग लेकर और रेसिपी बनाने में मास्टर बनकर टीवी पर आनेवाले शेफ प्रोग्राम्स में हिस्सा भी ले सकते हो।

मैजिशियन बनो

तुम्हें मैजिक देखना कितना अच्छा लगता है। तुम चाहो तो यहां दिए टिप्स का इस्तेमाल कर मैजिशियन भी बन सकते हो। बहुत सारी आसान मैजिक ट्रिक्स को काफी आसान तरीके से यहां बताया गया है, जिन्हें सीखकर दोस्तों और घरवालों के सामने दिखाकर तुम छोटा जादूगर बन सकते हो ।

अमेजिंग फैक्ट्स हैं भरपूर

वेबसाइट के ट्रिविया सेक्शन को क्लिक करने पर तुम्हें ढेर सारे अमेजिंग फैक्ट्स के बारे में जानकारी हासिल होगी। यहां पर पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, कीड़े-मकोड़े, मनुष्य, भाषा, अंतरिक्ष, मौसम और वातावरण के बारे में कई सारी अद्भुत जानकारियां हैं, जो कहीं और तुम्हें ढूंढ़ने से भी नहीं मिलेंगी।

जोक्स और गेम्स का लुत्फ उठाओ

खास तुम्हारे लिए जोक्स सेक्शन में काफी मजेदार चुटकुले हैं। एनिमल जोक्स, बर्ड जोक्स, हॉलिडे जोक्स, स्पेस जोक्स, मिक्स एंड मैच जोक्स पर क्लिक करने पर ऐसे-ऐसे चुटकुले मिलेंगे, जिन्हें पढ़कर तुम हंसते-हंसते लोट-पोट हो जाओगे। इसके अलावा गेम्स में कई तरह के इंडोर और आउटडोर गेम्स के बारे में भी जानकारी है। तो देर किस बात की, पापा के मोबाइल या लैपटॉप पर इंटरनेट ऑन करो और इस वेबसाइट पर क्लिक करके अपनी क्रिएटिविटी बढ़ाते हुए समर वेकेशन को यादगार बनाओ।

अपना क्लब बनाओ

अलग-अलग तो सभी कुछ न कुछ करते हैं, मगर सभी को साथ लेकर सभी की हॉबीज को एक साथ एक छत के नीचे समान अवसर देना भी किसी कला से कम नहीं। ऐसा ही कुछ करते हैं वसुंधरा एन्कलेव, दिल्ली में कुछ बच्चे, जो मिलजुलकर 'चकमक क्लब' चलाते हैं। खाली समय में इस क्लब के लिए अपना-अपना योगदान देते हैं। इस क्लब की शुरुआत तब हुई जब सोसायटी के बच्चों ने मिलकर अपने विचार दूसरों तक पहुंचाने के लिए 'नन्हीं कलम' नाम से पत्रिका निकाली। इसमें बच्चों द्वारा लिखी गई कविताएं, कहानियां व छुटपुट समस्याएं आदि होती हैं। इस पर खर्च अधिक न हो, इसके लिए जिसकी रचना छपती, लिखाई भी उसी की होती। पूरी पत्रिका को हाथ से ही लिखा जाता। मगर पत्रिका बहुत साफ-सुथरी लगती। पढ़ने वाले को कहीं अड़चन नहीं आती। कुछ बड़े-बड़े लोग, जिन्होंने काफी नाम कमाया है, उनकी रचनाएं भी छपी हैं, वे भी उनकी लिखाई में ही लिखी होती हैं। फिर फोटोकॉपी कराकर इसकी प्रतियां बांटी जाती हैं। सब बच्चे पूरे मन से इसकी बाइंडिंग आदि के काम में जुट जाते हैं।

हॉबीज से मिली जिन्हें प्रेरणा...

दादा साहेब फाल्के

दादा साहेब फाल्के को भारतीय सिनेमा का जनक कहा जाता है, क्योंकि उनकी बनाई हुई फिल्म 'राजा हरिश्चंद्र' (1913) भारत की पहली फिल्म थी। उनके नाम पर स्थापित दादा साहेब फाल्के पुरस्कार फिल्म जगत की एक जानी-मानी हस्ती को हर वर्ष दिया जाता है। दादा साहेब फाल्के का पूरा नाम धुंधिराज गोविन्द फाल्के था। उनका जन्म 30 अप्रैल 1870 को महाराष्ट्र के त्रयम्बकेश्वर (नासिक) नामक स्थान पर हुआ था। बचपन से ही उनकी कला संबंधी विषयों में बहुत रुचि थी। 15 वर्ष की आयु में आजीविका कमाने के लिए ड्राइंग सीखने वे जेजे स्कूल ऑफ आर्ट्स, बंबई में भर्ती हुए, लेकिन कलाओं में रुचि होने के कारण उन्होंने बड़ौदा के कला भवन में फोटोग्राफी, मॉडलिंग, आर्किटेक्चर और जादू जैसी कलाएं भी सीखीं। इन कलाओं से उनको बड़ी ऊर्जा मिली और आगे चल कर ये उनके फिल्म निर्माण के काम में बड़ी सहायक सिद्ध हुईं।

सर सीवी रमन

रमन प्रभाव के जनक सर चंद्रशेखर वेंकटरमन को 1930 में नोबेल पुरस्कार मिला। 1954 में उन्हें 'भारतरत्न' से अलंकृत किया गया। उनका जन्म तमिलनाडु के तिरुचिरापल्ली के पास एक गांव में हुआ। बालक चंद्रशेखर वेंकटरमन को नैतिक शास्त्र, गणित और दर्शनशास्त्र का ज्ञान अपने पिता से विरासत में मिला। स्वयं उनकी भी इन विषयों में बहुत रुचि थी। बचपन में ही वे वॉयलिन बहुत अच्छा बजाने लगे थे। इस वाद्य यंत्र ने वेंकटरमन के वैज्ञानिक मन को बहुत प्रेरणा और ऊर्जा प्रदान की। कॉलेज में पढ़ते समय उन्होंने तारों की झनकार पर प्रयोग किए थे। आगे भी उन्होंने इस विषय पर कई प्रयोग किए।

इंदिरा गांधी

इनका जन्म 19 नवंबर, 1917 को नेहरू परिवार में इलाहाबाद के आनंद भवन में हुआ। आनंद भवन में हरदम राजनीतिक वातावरण बना रहता, इसीलिए बचपन में ही इंदिरा की रुचि राजनीति में हो गई। बारह-तेरह वर्ष की उम्र में ही वे राजनीति में उतर आईं। उस समय उन्होंने कांग्रेस की सहायता के लिए बच्चों की एक वानर सेना बनाई, जिसमें 70,000 बाल सैनिक तैयार हो गए। बचपन में बनाई यह वानर सेना इंदिरा को प्रेरणा देती रही और वे राजनीति में आगे बढ़ती रहीं।

हॉबीज के फायदे

आगे बढ़ोगे

आज तुम जैसे बच्चे टीवी के अनेक सीरियल्स में छाए हुए हैं। अधिकतर विज्ञापनों में तुम बच्चे ही नजर आते हो। दरअसल ऐसे बच्चे अपनी पढ़ाई के साथ-साथ स्कूल के नाटकों, प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेने में कभी नहीं हिचकते।

होते हैं रिफ्लेक्सेस शॉर्प

क्लास में जब तुम्हारी टीचर अचानक से कुछ पूछती हैं तो स्मार्ट बच्चे तुरंत उत्तर दे देते हैं। तुम गौर करना, उनकी कोई न कोई मजेदार हॉबी जरूर होगी। उनकी वह एक्टिविटीज रिफ्लेक्सेस को शॉर्प करती हैं। जैसे डिबेट में भाग ले रहे उस हाजिर जवाब बच्चे को देखो, जो तुम्हारे प्रश्न पूछने पर घबराता, ठिठकता नहीं, तुरंत उसका जवाब दे देता है। उस बॉक्सर को देखो, जो अपनी ओर आ रहे पंच को पहले से भांप लेता है और बचाव के लिए चौकन्ना हो जाता है।

नजरिए में बदलाव

हॉबीज से तुम पॉजिटिव हो जाते हो। तुम्हें लगने लगता है कि तुम किसी भी क्षेत्र में कुछ भी कर सकते हो। ऐसे बच्चों को देख कर ही लगता है कि वे आत्मविश्वासी हैं। हॉबीज जहां तुम्हें अनुशासित बनाती हैं, वहीं तुम्हारे अंदर टीम स्प्रिट की भावना पैदा करती हैं, तुम्हें समय का पाबंद बनाती हैं।

कॅरियर की राह

अगर तुम भी स्पेनिश, फ्रेंच, या अंग्रेजी क्लब का हिस्सा हो तो उस भाषा में महारत हासिल कर लो। क्या पता, कल खेल-खेल में सीखी यही भाषा तुम्हारी ताकत बन जाए, तुम्हें कॅरियर की कोई राह सुझा दे। इसलिए तुम अभी से अपनी कोई हॉबी चूज कर लो और उसमें आगे बढ़ो।

लिटिल मिलेनियम एप्स आजमाओ...

दोस्तों, हम आज तुम्हें ऐसे एप्स के बारे में बताएंगे, जहां तुम खेल सकते हो और बिना शुल्क दिए काफी कुछ नया भी सीख सकते हो। यहां हर तरह की एक्टिविटीज कर पाओगे और मम्मी रोकेंगी भी नहीं..

आजकल तुम्हारी गर्मियों की छुट्टियां चल रही हैं। दिन की धूप में जब मम्मी तुम्हें घर से बाहर नहीं जाने देती हैं तो तुम उस समय में कुछ ऐसा कर सकते हो, जिससे मम्मी भी खुश हो जाएं और तुम खेल भी लो। ऐसे ही एप्स हैं लिटिल मिलेनियम एप्स। इन एप्स की खासियत ये है कि इनमें तुम्हारे लिए पोयम्स, थीम्स, इंग्लिश स्पीकिंग मॉड्यूल्स तो हैं ही, साथ ही कई सारे गेम्स हैं, मैनर्स हैं और फन के तरीके भी। तुम्हें सबसे ज्यादा पसंद आएगा स्टोरी एप, जहां तुम कई सारी कहानियां सुन सकते हो और उनके विजुअल भी देख सकते हो। तुम अपने छोटे भाई-बहन को हाउ टू काउंट, पजल सॉल्विंग, डिफरेंस बिटवीन बिग एंड स्मॉल आदि के जरिए बिजी भी रख सकते हो।

जोक्स

शादियां

दोस्तः सुना है कि शादियां आसमान में ही तय हो जाती हैं।
दूसरा दोस्तः बिल्कुल ठीक, लेकिन यह भी याद रखना कि बिजली भी आसमान से ही कड़कती है।

बच्चे जुड़वा

एक आदमी अपनी पत्नी को डिलीवरी के लिए अस्पताल लेकर गया, अस्पताल ने 20,000 रुपये मांगें, आदमी बोला : अगर दो बच्चे जुड़वा हो गये, तो कितनी छूट दोगे?

भाईचारा

अध्यापकः भाईचारा शब्द का प्रयोग करते हुए कोई वाक्य बनाओ?
चिंटूः मैंने दूध वाले से पूछा, तुम दूध इतना महंगा क्यों बेचते हो?
दूधवाला बोला बोला भाई चारा महंगा हो गया है, इसलिए।
दे थप्पड़ दे थप्पड़।

पैसों की बात

पप्पूः तुझे मुझसे जो मांगना है मांग ले।
तुझे सब मिलेगा।
गप्पूः पैसा।
पप्पूः पैसे को साइड में रख यार, इसके अलावा मांग जो मांगना है।
गप्पूः तेरे साइड में रखे हुए पैसे।

स्टूल की जरूरत

पति और पत्नी में जबरदस्त लड़ाई छिड़ी थी इतनी भयंकर कि पति ने मरने की धमकी दे डाली और स्टूल पर चढ़कर फंदा पंखें में डालने की कोशिख करने लगा।
पत्नी (एकदम रिलैक्स होकर): हो गया क्या, जो करना चाह रहे हो? जरा जल्दी करो, देर मत लगाओ, मुझे स्टूल की जरूरत है।

छत टपकना

पप्पू की छत टपक रखी थी ठीक डाइनिंग टेबल के ऊपर।
प्लम्बर ने पूछाः आपको कब पता चला कि छत टपक रही है?
शराबीः जब कल रात को मेरा पैग 3 घंटे तक खत्म नहीं हुआ।

बिस्कुट के पैकेट

सोहन आज मेरे पास इतने पैसे हैं कि मैं...
मोहनः बीच में ही कितने पैसे हैं।
सोहन इतने कि तीन चार बिस्कुट के पैकेट खरीद सकता हूं।

गला छोड़ दे

एक औरत मंदिर में बैठी रो रही थी।
पुजारीः क्या हुआ बेटी?
औरतः बाबा कल रात मेरे पति गुजर गए।
पुजारीः ओहो बहुत बुरा हुआ। उन्होंने मरते वक्त कुछ कहा क्या बेटी?
औरतः हां कह रहे थे मेरा गला छोड़ दे।
पुजारी बेहोश..।

शुरूआती नोक-झोंक, जो बाद में आपको गुदगुदाती है

नफरत करना

रिश्ते में आने से पहले एक समय ऐसा भी आता है कि आप उस लड़के का चेहरा तक देखना पसंद नही करतीं। हद तो तब हो जाती है कि आप उसको नीचा दिखाने का कोई मौका नहीं गंवाती। लेकिन अगर कहानी पलट गई और वह आपका हमसफर बन गया तो इन बातों का न केवल बाद में अफसोस होता बल्कि इन्हें याद करके गुदगुदी भी होती है।

प्यार की शुरूआत अमूमन नोक झोंक से ही होती है। हर लड़की जिसे बाद में चाहती है अकसर शुरूआत में उसके बारे में यही सोचती है, आखिर वह खुद को समझता क्या है? लेकिन यह सोच तभी तक रहती है, जब तक तकरार पिघलकर प्यार में नहीं बदल जाती। एक बार यह करिश्मा हो गया तो फिर वही अकड़ू और मगरूर दिल का शहजादा बन जाता है। बहरहाल हम यहां प्यार की शुरूआत का कारण बनने वाली ऐसी ही कुछ नोकझोक की बात कर रहे हैं, जिन्हें याद कर-के बाद में गुदगुदी होती है।

- **टांग खींचना :** आपको याद होगा कि जब भी आप उसके सामने से गुजरती थीं, उसने शायद ही आपकी टांग खींचने का कोई मौका गंवाया हो। कभी ड्रेस पर तो कभी चलने के स्टाइल पर। शुरू में ये तमाम बातें बहुत चिढ़ाती हैं लेकिन एक बार दोस्ती हो जाए तो फिर यही बातें दिल को गुदगुदाती है।
- **नखरे करना :** ऐसा भी होता है कि जब भी कभी आपने उसकी तरफ सकारात्मक इशारा किया, उसने आपको दरकिनार कर दिया। असल में अकसर बनने वाला हमसफर या हमकदम कुछ समय गुजरने के बाद थोड़े नखरे दिखाने लगता है। यह बात भविष्य में मुस्कुराने का भरपूर सबब बनती है।
- **दोस्त मानना :** रिलेशनशिप में आने से पहले अकसर वह लड़की का दोस्त होता है। मगर अचानक उसके प्रपोज कर देने के बाद कहानी नया रूप इख्तियार कर लेती है। लड़कियों को सामान्यतः दोस्तों द्वारा प्रपोज करना पसंद नहीं होता। हालांकि बाद में दोस्त से अच्छा हमसफर कोई नहीं लगता।
- **नजरंदाज करने का दिखावा :** लड़कियां इस बात को किसी से साझा नहीं करतीं, लेकिन हकीकत यही है कि वह चाहकर भी उस लड़के को नजरंदाज नहीं कर पाती जो उन्हें प्रपोज करता है। वह नजरदांज करने की हर संभव कोशिश करती हैं।
- **घमंड से भरना :** प्रपोज करने के बाद लड़के अकसर मासूम हो जाते हैं और लड़कियां घमंडी। निःसंदेह रिलेशनशिप में आने के बाद आप उन दिनों को अवश्य याद करना चाहिए जब आप घमंड के चलते लड़के की ओर मुड़कर देखना भी पसंद नहीं करती थीं और वह बेचारा...।
- **अचानक सब बदल गया :** असल में रिश्ते में आने के बाद आप दोनों यही सोचते रहते हैं कि आखिर ऐसा क्यों हुआ? आखिर दोनों में प्यार कैसे हुआ? लेकिन एक रोज ऐसा आता है जब दोनों पुरानी बातें भूलकर एक दूसरे की बाहों में होते हैं।
- **माफी मांगनाः** रिश्ते में आने के बाद लड़की पहले की गई अपनी तमाम बदतमीजियों की माफी मांगती है, लेकिन यह माफी का विषय नहीं होता बल्कि यह माफीनामा नये अंदाज का रोमांस बन जाता है।
- **दूसरे पहलू को देखना :** आप खुद को खुशकिस्मत मानती हैं कि पार्टनर की अच्छी बातें आपकी नजरों के सामने आयीं। सिक्के के दूसरे पहलू को देखने का मौका मिला। आपको एक समय उसकी कोई चीज अच्छी नहीं लगती थी। लेकिन आज स्थिति ये है कि उसकी हर चीज आपको दीवाना करती है।

विश्व मलेरिया दिवस

मलेरिया की रोकथाम और इससे बचाव

मलेरिया, वैश्विक स्तर पर हर साल लाखों लोगों की मौत का कारण बनने वाली बीमारी है। मलेरिया, मच्छरों के काटने से होने वाली बीमारी है जिसमें अगर समय पर इलाज न किया जाए तो रोग के गंभीर रूप लेने या मौत का खतरा हो सकता है। मलेरिया की रोकथाम और इससे बचाव को लेकर लोगों को जागरूक करने के लिए हर साल 25 अप्रैल को विश्व मलेरिया दिवस मनाया जाता है। मलेरिया, एक जानलेवा बीमारी है, जोकि संक्रमित एनोफिलीज मच्छरों के काटने से फैलती है। संक्रमित मच्छरों में प्लाज्मोडियम परजीवी होते हैं। जब यह मच्छर काटता है, तो परजीवी आपके खून में मिल जाते हैं। ये परजीवी लिवर में पहुंचकर वहीं पर बढ़ते हैं। इसके बाद परिपक्व परजीवी रक्तप्रवाह में प्रवेश करते हैं और लाल रक्त कोशिकाओं को संक्रमित करना शुरू कर देते हैं। संक्रमण के बाद इसके लक्षण दिखने में 10-15 दिनों का समय लग सकता है। मलेरिया का संक्रमण बरसात के दिनों में अधिक होता है पर यह अन्य मौसमों में भी आपको शिकार बना सकता है।

मलेरिया के लक्षण

- कंपकंपी वाली ठंड लगने के साथ बुखार की दिक्कत।
- सिर दर्द।
- जी मिचलाना-उल्टी।
- पेट-मांसपेशियों में दर्द
- मल से रक्त आने की समस्या।

बचाव

यदि रक्त की जांच में आपमें मलेरिया का निदान होता है तो डॉक्टर की सलाह पर इसके दवा का कोर्स पूरा करें। लक्षण कम होने पर बिना डॉक्टरी सलाह के दवा बंद न करें। मलेरिया से बचाव के लिए प्रयास करना बहुत आवश्यक है। मच्छरों को पनपने से रोकने के लिए पानी को जमा न होने दें, दवाइयों को छिड़काव कराएं। सोने के लिए मच्छरदानी का प्रयोग करें, पूरी बाजू के कपड़े पहनें जिससे मच्छरों के काटने से बचाव हो सके। अगर आपमें लक्षण दिख रहे हैं तो तुरंत जांच और इलाज प्राप्त करें।

धूप जलाए तो क्या करें?

सूरज की जो धूप हमें सर्दी में गर्मी देकर ठंड से राहत दिलाती है तो यही धूप गर्मी में कई तरह की परेशानियां लेकर आती है। इसके फायदे और नुकसान दोनों हैं। सूर्य का प्रकाश कई प्रकार की किरणों का एक पूंज होता है। जिसकी अलग-अलग वेवलैंथ होती है। इस वेवलैंथ को नैनोमीटर में मापा जाता है। 400एनएम से कम वेवलैंथ की किरणों को अल्ट्रावॉयलेट, 400 से 320 एनएम वाली वेवलैंथ किरणों को यूवीए, 320 से 290 एनएम वाली वेवलैंथ की किरणों को यूवीबी और 209 से 100 एनएम वाली वेवलैंथ की किरणों को यूवीसी कहा जाता है। अधिकतर यूवीसी किरणें वायु मंडल के ओजोन द्वारा अवशोषित कर ली जाती हैं। इसलिए इन किरणों का हमारी त्वचा पर कोई खास असर नहीं होता। यूवीबी किरणें हमारी त्वचा के ऊपरी भाग को प्रभावित करती हैं, यह त्वचा के जिंदा टिशूज को नष्ट कर देती हैं, जिससे त्वचा जल जाती है और इसे सनबर्न कहा जाता है। अब ओजोन लेयर के क्षतिग्रस्त होने के कारण यूवीबी किरणें हमारे पास ज्यादा पहुंचने लगी हैं। जबकि पहले यह इसी में अवशोषित हो जाती थी। गर्मी के दिन सुबह 10 से 2 बजे तक इनकी तीव्रता सबसे ज्यादा होती है।

- **यूवीए और यूवीबी किरणों का असर :** यूवीबी से सनबर्न होता है। यूवीए से त्वचा पर झुर्रियां पड़ती है। इससे शरीर में खुजली हो सकती है और त्वचा के कैंसर का भी खतरा रहता है।
- **आंखों पर असर :** अल्ट्रावॉयलेट किरणों से आंखों को भी काफी नुकसान होता है। कुछ घंटे की धूप भी आंखों के कोर्निया और पलकों की कोशिकाओं को नुकसान पहुंचा सकती है। ज्यादा वेवलैंथ वाली अल्ट्रावॉयलेट किरणों से आंखों का रेटिना क्षतिग्रस्त हो सकता है। अल्ट्रावॉयलेट किरणें मोतियाबिंद का भी कारण बन सकती हैं।
- **सनबर्नः** गर्मी के दिनों में ज्यादा समय तक धूप में रहने से सूर्य की अल्ट्रावॉयलेट किरणों से हमारी त्वचा के जीवित टिश्यू जल जाते हैं और त्वचा पर लाल रंग के चकत्ते हो जाते हैं। अल्ट्रावॉयलेट किरणों से त्वचा में मैलानिन प्रोडक्शन बढ़ जाता है। अल्ट्रावॉयलेट किरणें अगर त्वचा की भीतरी सतह में प्रवेश कर जाती हैं तो इससे भी त्वचा का नुकसान होता है। जिन लोगों की त्वचा गोरी और संवेदनशील होती है, उन्हें सांवली त्वचा वाले लोगों की तुलना में सनबर्न जल्दी होता है। अल्ट्रावॉयलेट रेडिएशन से त्वचा की कोशिकाओं और रक्त नलिकाओं में बदलाव आ जाता है। जिससे पिग्मेंटेशन हो सकता है। यही वजह है कि ज्यादा धूप में रहने की वजह से त्वचा का लचीलापन खत्म होने लगता है और त्वचा रूखी और बेजान हो जाती है और उस पर झुर्रियां पड़ जाती है।
- **कैसे बचें:** गर्मी के दिनों में पूरी बाजू के कपड़े पहनें ताकि सीधी धूप से बचाव हो सके। धूप में कम रहें। सूर्य की अल्ट्रावायलेट किरणों से आंखों को बचाने के लिए धूप के चश्मे का इस्तेमाल करें, सिर पर कैप पहनें। धूप में निकलते समय खुले अंगों पर मॉश्चराइजिंग क्रीम लगाएं।

अल्ट्रावॉयलेट किरणें और रोग प्रतिरोधक क्षमता

विभिन्न अध्ययनों से यह बात साबित हो चुकी है कि सूर्य की अल्ट्रावॉयलेट किरणें हमारी रोग प्रतिरोधक क्षमता पर बुरा असर डालती हैं। गर्मी के दिनों में तेज धूप में वायरल इंफेक्शन, बैक्टीरियल, पैरासिटिक और फंगल इंफेक्शन होने के खतरे बढ़ जाते हैं। विकासशील देशों में तो अल्ट्रावॉयलेट रेडिएशन से वैक्सीनेशन का प्रभाव भी कम हो जाता है, जिसके कारण इन बीमारियों से लड़ने की क्षमता कम हो जाती है।

मोटा न बना दें

मिडनाइट स्नैक्स

खाए हुए को पचाने में काफी समय लगता है। मध्य रात्रि में इतना समय नहीं होता, क्योंकि हम सो जाते हैं। इसलिए मिडनाइट स्नैक्स से बचना ही बेहतर है।

मिडनाइट स्नैक्स का सबसे बड़ा नुक्सान है वजन बढ़ना। देर रात्रि में खाए स्नैक्स सीधे-सीधे कैलरीज में बदल जाते हैं, क्योंकि उनको लेने के बाद कोई शारीरिक श्रम तो होता नहीं। इस तरह खाया पिया सीधे फैट में बदल जाता है, इसलिए मिडनाइट स्नैक्स से बचें।

दंत चिकित्सकों के अनुसार भी मिडनाइट स्नैक्स दांतों को काफी नुक्सान पहुंचाते हैं, क्योंकि मिडनाइट स्नैक्स लेने के बाद अधिकतर लोग दांतों में ब्रश नहीं करते। खाकर सीधा सो जाते हैं। इसलिए खाद्य पदार्थों के कुछ कण दांतों में चिपके रह जाते हैं जिनमें बैक्टीरिया पनपने लगते हैं।

विशेषकर मीठा

खाने के बाद तो इनसे बचना नामुमकिन है। इससे दांतों में कैविटीज हो जाती है। मिडनाइट स्नैक्स खाते समय तो बहुत मजा आता है पर इनसे हमारा पाचन तंत्र प्रभावित होता है। खाए हुए को पचाने में काफी समय लगता है। मध्य रात्रि में इतना समय नहीं होता क्योंकि हम सो जाते हैं। इसलिए मिडनाइट स्नैक्स से बचना ही बेहतर है।

रखें ध्यान

- रात्रि में भूख लगने पर फल खाएं। जंक फूड व हैवी फूड न खाएं। फलों से आपको कई विटामिंस और मिनरल्स भी मिलेंगे और पचेंगे भी जल्दी।
- दिन भर में छोटे छोटे पांच मील लें। तीन मील लेने वालों का भोजन अंतराल बढ़ जाता है। स्वाभाविक है भूख लगने लगती है।
- देर रात तक जागने की आदत न डालें क्योंकि देर रात तक जागने से भूख लगना स्वाभाविक है। समय पर सोने और उठने की आदत डालें।
- रात्रि में कुछ भी खाएं, सोने से पहले ब्रश अवश्य करें।
- लेट खाने के बाद घर में ही अवश्य टहलें।

प्रेरक कथा

अहंकार का दान

बुद्ध मगध की राजधानी में आए तो वृक्ष के नीचे बैठकर सबकी भेंट स्वीकार करने लगे। सम्राट बिम्बसार वहां आए और उन्होंने हाथी-घोड़े, भूमि, महल और अनेक वस्तुएं भेंट की। सेठ और साहूकारों ने बेशकीमती जवाहरात भेंट में दिए। तभी एक वृद्ध महिला आधा फल लेकर आई और बोली- भगवन मेरे पास देने के लिए कुछ नहीं है।

मैं बहुत गरीब हूं। जब मुझे मालूम पड़ा कि आप आए हैं उस वक्त मैं इस फल का आधा भाग खा चुकी थी। बस यही आधा फल आपके चरणों में अर्पित करना चाहती हूं। कृपया इसे ग्रहण करें, इंकार मत कीजिएगा।

इतना सुनते ही बुद्ध आसन से उतरे और अपने दोनों हाथ फैलाकर वृद्धा का जूठा आधा फल स्वीकार कर लिया। यह देखकर वहां मौजूद लोगों और राजा को बहुत आश्चर्य हुआ। मगध के सम्राट ने जब इसका रहस्य पूछा, तो बुद्ध बोले-सभी ने अपनी बहुमूल्य संपत्ति का एक अंश मात्र दिया है। उसमें दान देने का अहंकार भी शामिल है। इस वृद्धा ने अपना सर्वस्व अर्पित कर दिया है, लेकिन इसके मुख पर कितनी करुणा तथा नम्रता है। ऐसा जवाब पाकर सभी का सिर झुक गया और तब उन्हें समझ आया कि बुद्ध गरीबों के बीच इतने लोकप्रिय क्यों हैं?

किचन गार्डन में पालक उगाएं

पालक एक ऐसी हरी पत्तेदार सब्जी है जो आयरन, विटामिन-ए, सी, थाइमीन, पोटाशियम और फोलिक एसिड से भरपूर होती है। इसे अपने किचन गार्डन में बेहद आसानी से उगाया जा सकता है। इसकी खास बात यह है कि पालक की पत्तियों को अगर ऊपर से काटकर इस्तेमाल में लाया जाता है तो जड़ से जल्द ही नयी पत्तियां निकल आती हैं।

पालक की देसी-विदेशी कई प्रजातियां हैं। देसी पालक में बनारसी, कटनी और बेंजीज प्रमुख हैं। इसे सर्दियों में भी उगाया जाता है। जुलाई में उगाने के बाद नवंबर-दिसंबर में यह इस्तेमाल लायक हो जाती है और पालक से ही इसके बीज आसानी से तैयार किये जा सकते हैं।

मिट्टी : पालक की मिट्टी में हर समय नमी की मात्रा बनी रहनी चाहिए। मिट्टी ऐसी हो जिसका पीएच मान 6.0 से कम नहीं होना चाहिए। एक बार उगने के बाद यह बहुत जल्दी बढ़ती है। नाइट्रोजनयुक्त खाद इसकी अच्छी बढ़वार के लिए आवश्यक होता है या ऑर्गेनिक खाद द्वारा भी गहरे, हरे रंग की स्वस्थ पत्तियों वाली पालक पायी जा सकती है। इसे गहरे तल के गमले में भी आसानी से लगाया जा सकता है। मिट्टी तैयार करने के बाद बीज डालना चाहिए। अगर इसे जमीन में रोपकर फिर गमले में लगाना हो तो बीज डालने के दो से तीन सप्ताह के बाद लगाना चाहिए। अगर इसे क्यारी में लगाना है तो एक एक इंच का स्थान छोड़कर एक से दो फिट गहराई में जमीन खोदकर बीज को डालना चाहिए और इसके बाद बीज को मिट्टी से ढककर पानी छिड़कर सिंचाई करनी चाहिए। जब तक बीज से नया पौधा न निकल आये तब तक मिट्टी को नम रखना चाहिए। इसकी पत्तियां जब पूर्ण विकसित हो जाएं तो इन्हें सिरे से काटकर इन्हें इस्तेमाल में लाया जा सकता है। ज्यादा गर्मी में

इसके पौधे मुरझा जाते हैं। इसलिए मई या जून में बुआई नहीं करनी चाहिए और इसे अगर बड़े पेड़ों या पौधों के नीचे लगाया जाए तो पत्तियों की बढ़वार अच्छी होती है। अगर इसे ज्यादा सर्दी के मौसम में बोया जाता है तो पौधे जल्दी विकसित नहीं होते। नये पौधे निकलने के बाद परिपक्व होने से पहले इन्हें सूखी पत्तियों से ढक देना चाहिए ताकि वातावरण में गर्मी होने पर इनकी अच्छी वृद्धि हो सके। गमले में भी इसकी अच्छी बढ़वार होती है। लेकिन मिट्टी हमेशा नम रहनी चाहिए। गमले में इसके पौधे जल्दी सूखते हैं। अगर इसे जमीन में लगाया जाता है तो दूसरे बेलों या बड़े पौधों के पास लगाएं। इससे यह जल्दी बढ़ती है।

जन्मदिन पर विधायक देवेंद्र यादव को दिया स्नेह और आशीर्वाद

भिलाई अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के राष्ट्रीय सचिव व भिलाई नगर विधायक देवेंद्र यादव ने सेक्टर 5 स्थित कार्यालय अपने विधानसभा क्षेत्र की सम्मानित जनता के साथ केक काटकर जन्मदिन दिवस मनाया। विधायक ने सपत्निक गौ माता की पूजा की और श्री संकट मोचन हनुमान मंदिर सेक्टर 9 पहुंचे। जहां उन्होंने हनुमानजी महाराज की पूजा कर आशीर्वाद प्राप्त किया। सुबह से देर रात तक चली कार्यक्रम में लोग कतारबद्ध होकर विधायक पुष्प गुच्छ और फूलमाला पहनाकर जन्मदिन की बधाई दी। केंद्रीय राज्य मंत्री तोखन साहू, छत्तीसगढ़ विधानसभा अध्यक्ष डॉ रमन सिंह, पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल, पीसीसी अध्यक्ष दीपक बैज, पूर्व मंत्री टीएस सिंह देव समेत अन्य नेताओं ने फोन कर बधाई दी । स्कूल शिक्षा मंत्री गजेंद्र यादव शाम को विधायक से मिलने पहुंचे एवं जन्मदिन की बधाई दी एवं परिवार के सदस्यों से भी मुलाकात की। पूर्व गृह मंत्री ताम्रध्वज साहू, पूर्व विधायक प्रतिमा चंद्राकर, छन्नी साहू, महापौर विशाली निगम शशि सिन्हा, भिलाई निगम महापौर नीरज पाल ,जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष मुकेश चंद्राकर, धीरज बाकलीवाल समेत अन्य बधाई और शुभकामना दी।

कृषि की उन्नत तकनीक के साथ नवाचारी में यहां के किसान अग्रणी भूमिका में -गजेन्द्र यादव

कृषि मंत्री श्री नेताम ने साथी बाजार अधोसंरचना निर्माण कार्य का किया भूमिपूजन

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

दुर्ग। प्रदेश के कृषि विकास एवं किसान कल्याण तथा जैव प्रौद्योगिकी, मछली पालन एवं पशुधन विकास मंत्री श्री राम विचार नेताम के मुख्य आतिथ्य में आज बीज निगम प्रक्षेत्र रूआबांधा भिलाई में देश का प्रथम साथी बाजार अधोसंरचना निर्माण कार्य का भूमिपूजन संपन्न हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता स्कूल शिक्षा, ग्रामोद्योग, विधि एवं विधायी कार्य मंत्री श्री गजेन्द्र यादव ने की। प्रदेश के अन्य पिछड़ा वर्ग विकास प्राधिकरण के उपाध्यक्ष एवं दुर्ग ग्रामीण विधायक श्री ललित चन्द्राकर कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए। लगभग 60 करोड़ रूपए की लागत से बनने वाली साथी बाजार के माध्यम से किसानों को आत्मनिर्भर बनाने अनेक सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएगी। जिसमें कृषकों के स्व सहायता समूहों / एफ.पी.ओ. को उनके उत्पाद सीधे उपभोक्ता को विक्रय करने हेतु अपना मंडी उपलब्ध होगा। कृषको के स्व सहायता समूहों / एफ.पी.ओ. को अपने उत्पादो का भण्डारण करने के लिये 5000 मि. टन का कोल्डस्टोरेज उपलब्ध कराया जायेगा। कृषकों के स्व सहायता समूहों / एफपीओ. को अपने उत्पादों का प्रसंस्करण कराने के लिये प्रसंस्करण उद्योग स्थापित किया जाएगा। कृषकों को उच्च गुणवत्ता एवं उचित मूल्य पर आदान सामग्री उपलब्ध कराने के लिये एग्रीमॉल स्थापित किया जाएगा। कृषकों को नवीन तकनीक की जानकारी एवं सलाह, किराये पर उपकरण तथा परीक्षण सुविधा उपलब्ध कराने के लिये कृषक सहायता केन्द्र स्थापित किया जायेगा जिसका संचालन विश्वविद्यालय के स्नातको द्वारा किया जायेगा। कृषकों के स्व सहायता समूहों, एफ.पी.ओ / स्वदेशी कंपनियो को अपने उत्पाद विक्रय करने के लिये सुपर बाजार उपलब्ध कराया जायेगा। प्रदेश एवं देश की स्वदेशी उद्यमों को अपने उत्पाद विक्रय करने के लिये स्पेशल प्रमोशन जोन के माध्यम से विक्रय काउंटर बूट मॉडल पर उपलब्ध कराये जायेंगे। प्रदेश एवं देश के प्रसिद्ध रेस्टोरेंट को अपना विक्रय काउंटर खोलने के लिये स्थल बूट मॉडल पर उपलब्ध कराये जायेंगे। प्रदेश एवं देश के प्रसिद्ध गेमिंग कंपनियों को अपना काउंटर खोलने के लिये स्थल बूट मॉडल पर उपलब्ध कराये जायेंगे। राज्य की शासकीय इकाईयों जैसे दुग्ध महासंघ, लघुवनोपज संघ, हस्तशिल्प विकास निगम इत्यादि को अपने उत्पाद विक्रय करने के लिए जगह उपलब्ध कराई जाएगी।

कृषि मंत्री श्री राम विचार नेताम की मौजूदगी में किसान कल्याण एवं कृषि के नवाचार हेतु चार एमओयू भी हुए। जिसके अन्तर्गत सेरीक्राफ्ट फाउण्डेशन रायपुर द्वारा शहतूत (मलबेरी) कोसा उत्पादन कर उत्पादित कोसा को खरीदने की व्यवस्था, कवरक्रॉफ्ट इंश्योरेंस प्राइवेट लिमिटेड द्वारा जोखिम को कवर करने के लिए सभी किसानों व जरूरतमंदों को बीमा सुरक्षा, स्वामी विवेकानंद टेक्नीकल युनिर्वसिटी द्वारा ग्रामीण प्रौद्योगिकी एवं इन्टरप्रेनरशीप कृषकों एवं उनके विद्यालयीन बच्चों के लिए शिक्षक प्रशिक्षण उद्यम एवं विपणन हेतु मेंबरशीप देना तथा श्री बलराम कृषि को-ऑपरेटिव सोसायटी द्वारा फसल परिवर्तन नेपियर घॉस उगाकर उपज की खरीददारी, पलारी विस्तारकरण हेतु कांफ्रेंस, बायोगैस एवं पैलेट निर्माण कर किसानों की आय में वृद्धि किया जाएगा।

समारोह को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि कृषि विकास एवं किसान कल्याण मंत्री श्री राम विचार नेताम ने कहा कि किसानों के लिए आज दिन ऐतिहासिक दिन है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के किसानों की आय दुगुनी कर आत्मनिर्भर बनाने की परिकल्पना यहां मूतभूर्त रूप लेने जा रही है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री जी के सोच के अनुरूप साथी बाजार के माध्यम से आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराए जा रहे हैं। इस बाजार के माध्यम से बेरोजगार भी अपने तकनीकी ज्ञान के आधार पर कृषि के क्षेत्र में नवाचारी कर सकेंगे। उन्होंने कहा कि दुर्ग जिला के किसान नवाचार करने में अग्रणी है। किसानों को उनकी मेहनत का उचित दाम दिलाने का यह एक अच्छा पहल है। प्रदेश की सरकार किसानों के स्वाभिमान बढ़ाने बेहतर कार्य कर रही है। उन्होंने साथी बाजार की सौगात के लिए यहां के किसानों को बधाई एवं शुभकामनाएं दी। कार्यक्रम के अध्यक्ष स्कूल शिक्षा मंत्री श्री गजेन्द्र यादव ने कहा कि कृषि की उन्नत तकनीक के साथ नवाचारी में यहां के किसान अग्रणी भूमिका में है। इनके उत्पाद देश के अन्य प्रांतों में भेजे जा रहे हैं। साथी बाजार के माध्यम से उत्पादों के उचित मूल्य मिलने पर उनके आय दुगुनी होगी और वे आत्मनिर्भर होंगे। उन्होंने देश का प्रथम साथी बाजार निर्माण के लिए दुर्ग जिले के चयन पर कृषि मंत्री श्री नेताम जी के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि दुर्ग ग्रामीण विधायक श्री ललित चन्द्राकर ने कहा कि यह बड़ी गौरव की बात है कि उनके विधानसभा क्षेत्र में देश का प्रथम साथी बाजार का निर्माण किया जा रहा है। आने वाले दिनों में यहां के किसान भाईयों को साथी बाजार के माध्यम से उनके उत्पाद को उचित दाम में बेचने का अवसर मिलेगा।

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने वरिष्ठ पत्रकार स्वर्गीय मधुकर खेर की जयंती पर किया स्मरण

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने वरिष्ठ पत्रकार स्वर्गीय मधुकर खेर की जयंती (21 फरवरी) पर उन्हें स्मरण करते हुए भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ में हिन्दी एवं अंग्रेजी पत्रकारिता को सशक्त स्वरूप प्रदान करने में स्वर्गीय मधुकर खेर का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण और अविस्मरणीय है।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि स्वर्गीय खेर ने अपनी निष्पक्ष, तथ्यपरक और जनोन्मुखी पत्रकारिता के माध्यम से समाज में जागरूकता का विस्तार किया। उन्होंने आमजन से जुड़े मुद्दों को प्रमुखता से उठाकर शासन-प्रशासन का ध्यान जनहित के विषयों की ओर आकर्षित किया और सकारात्मक परिवर्तन की दिशा में प्रभावी भूमिका निभाई। मुख्यमंत्री ने कहा कि स्वर्गीय मधुकर खेर की लेखनी सामाजिक सरोकारों से गहराई से जुड़ी रही। उन्होंने प्रदेश में जिम्मेदार, मूल्यनिष्ठ और स्वस्थ पत्रकारिता की मजबूत परंपरा स्थापित करने में उल्लेखनीय योगदान दिया।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि स्वर्गीय खेर का समर्पण, उनकी कार्यशैली और उनके उच्च आदर्श आज भी प्रदेश के पत्रकारों तथा नई पीढ़ी के लिए प्रेरणास्रोत हैं। उनके विचार और सिद्धांत हमें निष्पक्ष, सशक्त एवं समाजोन्मुखी पत्रकारिता की दिशा में निरंतर आगे बढ़ने की प्रेरणा देते रहेंगे।

पीआरजीआई सं.-CTHIN/25/A3746 यह हिंदी सांध्य दैनिक समाचार पत्र नई दृष्टिबिंद स्वामी एवं प्रकाशक आलोक तिवारी द्वारा समय दर्शन प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स द्वारा प्लॉट नं. 339/6, गली नं. 02, पाटन, थाना उतई, दुर्ग, (छ.ग.)-491111 से मुद्रित करवा कर। 80/बी, मैत्री विहार, राधिका नगर, सुपेला, भिलाई, जिला दुर्ग, (छत्तीसगढ़)-490023 से प्रकाशित संपादक आलोक तिवारी मो. 7415469100 (समाचार चयन के लिए पीआरबी एक्ट के तहत जिम्मेदार), समस्त विवादों का निपटारण न्यायालयीन क्षेत्र दुर्ग होगा।